दूररा - अब्ज्ञाब्र
---------

प्रेमचं ले उपन्यासः
---------

एक विकासात्मक ख्याताः
---------
प्रथम रचनाकार कभी युग को उपन्यास होता है। समय और समाज का प्रथम रचनाकार की प्रेमवंद का क्षीण होता है। प्रेमवंद हिंदी के पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने कभी रचना-कल्पना की समय और समाज के ही जोड़ा है। उन्होंने उपन्यास को बादुः प्रधानुष्ठान का दीवार है। मुक्ति मिलने पाना जीवन की क्षार्क्ता का नक्शे बाचार दिया। क्या इस परम्परा की शुरुआत मार्तण्डकु युग के निभावू और उपन्यासों ने ही हो चुकी थी। इस बंदों में की आवश्यकता का धर्म निष्ठा-पुश्चने और वाम कुष्णा मर्द का 'भेड़िया बधान और एक पंजाब' उल्लेखनीय है। "हालचौं मार्तण्ड-युग के निभावू और उपन्यासों के पहले बड़ह थोड़ी संख्या में थे। "भेड़िया भेड़िया तिवारी" निभायी होई थी। प्रेमवंद ने ही लाखों पाठकों का "धेमवार-बधन" का पाठक बनाया। यह उन्का युगान्तत्कारी क्रम था।" 1 एकलाक्षण के बाद प्रेमवंद का दर एक सक्षम उपन्यास उनकी मौलिक प्रतिमा का साथक वर्ण बनाकर आया, और प्रेमवंद उनकी ऊँची क्रांतिकारी साहित्यिक निर्धारिताओं को उपयोग में वापस प्रेमवंद हूँती गयी।

1- भूरो राम विलास शर्मा: प्रेमवंद और उनका युग - पृष्ठ - 31
प्रस्तुत ठिक है कि 'मैं उपवास को मानना - परित्य का विचार मात्र कमरा हूँ'। मानव - परित्य पर प्रकाश दाना और उसके रहस्यों को बौद्ध ही उपवास का मूल तत्त्व है। वे साधारण तौर पर शांतियों की प्रक्षेपण की चीज नहीं मानते। इसके अनुसार 'स्वार्थी क्षौटी' पर यही शांतियों करार उत्पन्न, जिससे उच्च मित्र जैसे, स्वाभाविक तथा नाम हो, भौतिक तथा विश्वास हो, कीवन की बाह्यता यह, जो उन्म्य गति तो लुभै लेना कर, हुए बुलावे नहीं। वे मानते थे कि भ्रण में होने वाली उपवास, वान्दर्शी तथा धूल ही बक्सा होकर मैं विश्वास करने वाले शांतियों के लिए: कीर्तियों तथा वेश वाक्सरों का वाक्स बनाकर चीवन लापन करने वाले शांतियों के लिए यह दुनिया में कोई बाह नहीं है। और इन्हीं शांतियों के बाद भी नहीं कीर्तियों ने बफरी भ्रण को शांतियों एवं वैज्ञानिक यात्रा पर निराकर बनायें रहा।

प्रस्तुत ने लगभग 1801 में उपवास की शिक्षा शुरू की और चीवन - परित्य ठिक की रहे। वहीं हट्टीहरे वर्णों के शांतियों जीवन में उन्होंने लगभग एक दशक उपवास दिखा। बफरी रचनात्मक भ्रण के विश्वास - यथाप्राप्त में उनकी यथा कुर्चित अलंकार चित्र होती गयी। जब उनके मन्त्रस्ता उपवास के अन्तर्गत वाक्स तथा लेखीयां वाद्यवाद का संबंध है वहीं पर्यावरण तथा पर्यावरण उपवास क्रम: शांतियों के वाक्स के जोड़े में से बनते चले गये है। भीतर उपवास गोदानों के वेश शक्तियों शांतियों का देतियों द्वारा दिखाई बन गया है। बफरी सुपरी भ्रण में उन्होंने पुनीत हतियों को क्रांतिक्रांतिक्षेत्र देखा जीवंत बनाया है। यह लग है कि...

1- प्रस्तुत : कुर्चित विचार - पुस्तक : 47
2- - कहीं - - पुस्तक : 24-25
3- प्रस्तुत : शांतियों का उदेश्य पुस्तक : 20

( कुर्चित विचार )
बाद तीसरे वर्षों का हतिहास दुर्गम रहा हुआ है बाद तो इन प्रबंधों के
उपन्यासों के व्याख्या सामाजिक, राजनीतिक, तथा राजनीतिक गतिविधियों के
हतिहास का पूरा सनातन ग्रन्थ कर सकते हैं।

प्रबंध के साथ का समान गुलामी और दाखल की तालिम विधि है
गुजर रहा था। वैज्ञानिक अध्यापन के विषय मे बाहरीय मंडल और विभाग
पर्स्म रहा था। समाज का सामान्य दृष्टि पूरी गुलामी पर था। जब, बिल्कुल
विभाग जो फिल्म अधिक शिक्षित न उसका स्वाभाविक था उनका स्वाभाविक न उनका शिक्षा था।
प्रूसों के, वेदिसारी और शोभणा वर्म विभाग पर थे। जीवनिण, कार्मिक और
बापू और सामाजिक संपथा शोभणा - ब्रह्म के प्रति जवाबदेह थे, और बेवारे फिल्माध्य में
मजरानों का दर्जा अधिकक्षणीय होती आ रही थी। ग्रामवासी फिल्माध्य
पर्स्म, नैतिकता और धौंट्यै सम्बन्धित विधियों का कायम था जिसकी वार्ता
शैक्षणिक - वर्ण धूर्त, फूल रहा था। वैद्युतिक लोक - समाज का देश - दुनिया
की गतिहीनता की कौदेख लग नहीं थी। वफ़ै दुनिया के प्रति का नियतिपरक
ब्रह्म के साथ वह समाप्त था। लाभों ने समाज का चक्कर एवं ब्रह्म बाहर
प्रभाव के पीड़े परिचालन था। का सामाजिक और धौंट्य व्यक्ति की बीमा ब्याज
वार्ता का अंद एवं वर्ण का खशे ख़ान दुःख था। बड़ी - गही परम्पराओं में है जिसके
रखने वाले बालक ने बालक ने उनकी यात्रा का विचार अनुकूल था। वफ़ै - उन्ही नेताओं
के विरोध प्रदर्शन ने बालक उपन्यासों में प्रका है। यह दुःख गुलामी के
मजरानों वर्ण विभागों की जड़ों को पलायन कर उनके प्रति
वैतक दुःख की प्रबंध के सी और उनके उज्ज्वल का राजस्त शीर्ष कर

प्रबंध ने आर्मीक उपन्यासों में धामाजक समस्ति को जड़ों को
तो बुद्धि पक्ष लिखा है ते ही वुल्किक का व्यक्तित्व कर सकता है।

1- प्रबंध : १०० छोटे सम्पादन में बालक डॉ० निमित गिस्स का। १०५
निर्माण वादशरण संपादक.
लक्ष्य है: क्योंकि उनका दृष्टिकोण मुखरखवरी था। राजनीतिक और सामाजिक ज्ञान के बहुते के साथ ही उत्तरार्द्ध उनकी मुखर राष्ट्रवादिता बनाये के प्रति समर्पित होती गयी और बाद के उपन्यासों में उनकी नवर वाणिज्य साफ और फ़ेरी चोटी गयी है। बाहरियाँ धुःख का स्थान क्षेपण के ज्ञाति ने है दिया। उनके उपन्यासों को लेकर गए का अनुचार तीन वर्ष वर्ग में यिशालित कर एम उनके बावार पर लेखकीय दृष्टि का प्रमाधुरार विशालत्र बाकी करेगे।

1- बाराभाषा उपन्यास:

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्षां</th>
<th>मास</th>
<th>वर्षां</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1905</td>
<td>6</td>
<td>1916</td>
</tr>
<tr>
<td>1906</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1916</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

2- मथ्यवर्णी उपन्यास:

<table>
<thead>
<tr>
<th>नाम</th>
<th>वर्षां</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>फ्राँसा</td>
<td>1922</td>
</tr>
<tr>
<td>बनक्स</td>
<td>1923</td>
</tr>
<tr>
<td>रेत्रस्य</td>
<td>1925</td>
</tr>
<tr>
<td>शाकाहर</td>
<td>1928</td>
</tr>
</tbody>
</table>

3- पाकाली उपन्यास:

<table>
<thead>
<tr>
<th>नाम</th>
<th>वर्षां</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>गान</td>
<td>1931</td>
</tr>
<tr>
<td>क्याॉपिग</td>
<td>1932</td>
</tr>
<tr>
<td>गौडा</td>
<td>1936</td>
</tr>
<tr>
<td>महान</td>
<td>बुध</td>
</tr>
</tbody>
</table>
1- बाराम्भिक उपन्यास

प्रेरित ने अपनी पहली लिखने की कुर्सियाँ से शैर-रॉमान्टिक धारावाहिक दुस्तुर है की थी। नामू के प्रजात्व - प्रजात्व पर लिखा गया उनका प्रकाश एक धारावाहिक ध्वन्य था। इसके पाँच वर्षों के बाद उन्होंने रूठी - रानी के नामक एक दैत्यावधातर उपन्यास लिखा, जिसी उन्होंने राजकुमारों की बीतता और देश - पत्थर को आवश्यक रूप में प्रस्तुत किया। और देश की स्वतंत्रता के लिए देशमंडल और बीतता के साथ इंग्लिश भाषा के प्रति विशेष आकाश दिखाया। इस उपन्यास में लेखक ने धारावाहिक दुरारंभी (नारी की विरोधिता बालि) की बीतती फी ध्वन्य विवाहा। इसके पत्तन प्राप्त करने के कारण इसमें पाठकों का बारिश - विश्वास नहीं है उसका है की व्याख्या की चर्चा का होती है। लगभग इसी समय प्रेरित ने "रघुराम" और "कुशल" नामक उपन्यास भी लिखे थे। इसका वरदान के ही उनकी वैदिक धाराविक लेखन - वात्स्य का प्रस्ताव - बिनु पाना जाता है।

वरदान

लघु उपन्यास का रचनाकाल सर 1905-6 है। यह पहले उदू में लिखा गया था, जिसका नाम "बुझा - ए - रूहरे (त्याग का दिर्गकृत)" था। वरदान का मुख्य प्रतिपाद विषय देश-भाषा है। लघु समय सुमारा विश्व बारिश घटना ने गुजर रहा था। युद्ध का दौड़काल वातावरण तैयार हो चुका था। जापान ने महाशक्ति रूप को प्रस्तुत कर दिखाया था। सांताम्बोद्धव शक्तियों के शैल्या और व्यापार द्वारा कोड़े देश चुरू थे। उपन्यासियों में स्वतंत्रता की लहर फैल रही थी। मात्र में श्रृष्टिन्तक तिलक के नेतृत्व में उन्मुख लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था। इसी समय प्रेरित ने स्वतंत्रता, देश-भाषा और राष्ट्रीय वातावरण प्रतिष्ठा की स्थापना की आवश्यकता मानने की। वरदान का ही निष्वास का
ारामक प्रज्ञा है। कथा के पहले पारंपरिक में भुजिया, देसी है एक दैवी पुत्र का वर्धन माँगती है जो वपना जीवन देख - देखा में वात्सिक कर देखे।

वर्धन में प्रज्ञा और विरक्त का कल्पना प्रेम क्षणी के साधन का है। करीर लड़की विरक्त का गरीब लड़के प्रज्ञा है विवाह न हो जाए, विरक्त की मानसिक क्षणिति, भाला की मौत तथा मादशी के एक नामक विरोधी बल व हस्त का प्रज्ञा का अपंगावलोकनी विद्याही जीवन वागि उपस्थाप के मुख का - बिन्दु है। इस उपस्थाप में प्रेमचंद ने बसी बच्चवालियों और मादशी के बौद्ध लाखपत्रों के बच्चों की बल्लसामारिक बना दिया है।

कस्म घटनाओं के बेहतरीन जाल में सपना पात उद्योग कर रह गए हैं।

इसके बाद उपस्थाप में बुध तपस्या दुवंद्वर्ण है। प्रेमचंद ने हिंदी श्लोक सारांशण के वर्तमानता की उपेक्षित करते हैं जब वह पहले क्षण में शाश्वत कर सकते हैं।

भाषावाद में क्षण - शाश्वत स्थान तक रहें है। 0000 को पर्यन्त तक रहें वे एक बार फ्लेक्टर बाह्य को शाश्वत करते हैं।

व्यावसाय का क्षण - धार्मिक प्रज्ञा कर रहे हैं। तदनत्तर बाह्य बहादुर घाट पर गान तहरुः रेसिटल दिये हुए मिले और बोळे - बाह्य धार्मिक, हमको लें है कि धार्मिक बाह्य धार्मिक पहुँच। मुसी बात क्षणबास नहीं है। क्षण पर पात है। बाप रेख नींद वाले।

इस सूनकर उन्होंने साधन बहादुर को शाश्वत किया और बड़ी बात पर फिर किंद्री बैठक की तैयार को पर गये। बाच - प्रतिष्ठा और बात।

1- प्रेमचंद : वर्धन - पुष्प - 23-24
उनकी सौजन्य दस्ता है। यहाँ निकटी हुई है। वे सिवार्त्त की पूर्वांगों 
और दाँतिवेद के जीवित चित्र है। किमी के शरीर पर एक बेडकटा भरत नहीं 
है और उसे मानविक है कि रात - दिन फिना बसाने पर नी की गरी पर पैट 
रौटियां नहीं मिलतीं। 1 इसी प्रकार ग्रामीण नि-विविधता, पृथ्वी की 
बकरीबात, जल्दी और रिश्तोगरी शान्तकारी और वृद्धियों की 
ज्यादतयों के चित्र विरजन के प्रकाश के माध्यम से प्रकाश में जाते है।

उपरोक्त तथ्यात्मक स्वाभाविक प्राणीय के बालुक क्षात्रिय के क्षेत्र में "वर्तमान" प्रक्षेप की एक अपरिवर्तन रचना है। इस पत्र का मनोकृतिक 
चरित्र नहीं है, इसी पत्रांग और पा तैक के विषय पर विवादित है। एक 
और विरजन का कला को प्रसंज - पत्र लिखना यौल धुरी और प्रसार के तिथियों 
में उत्कर्ष वीर्यांप्रोफ और प्रसार के जाने पर ही कला होना, प्रसार को 
विशेष रूप से - भिन्न पाठक का प्रमोक्षापित हो जाना और व्यक्तिक प्रसुण्य 
वनकर प्रसार की अनुगमनित बन जाना, सुप्रसूत और बालरा शास्त्र वाण 
करने के प्रसार से गुहरे जाना और प्रसार चार कर अं: बाबरागढ़ी करते हुए 
एक दुर्खान्त में पर जाना, तथा दुर्घट चरित्र के इतिहास युक्त प्रसार का ईतिहास 
भाषाएँ इतिहास बन जाना एकम महान गयक पत्रांग है।

वर्तमान में क्षात्रिय की सिद्धांत, पत्रों के बस्तामात्मक चरित्र के 
विरजन में क्षत्रिय की शाखा, पत्रों के बस्तामात्मक चरित्र के 
कला कुछ तकीकी शाखाएं ही है। पाण्डव की वनकर भी कली है। 
फिर वह वर्तमान में ही इस प्रक्षेप की वास्तव यात्रा की तेलरी का वातावर 
जबर पाते है।

प्रति जा :-

यह उपन्यास वर्ष 1906 में लिखा गया था, यह "वर्तमान" की कुलना

1- प्रक्षेप : वर्तमान - प्रक्षेप : ८३
मै बाधित सुखम टुकड़ा उपन्यास है। भारतीय समाज की जिनका पारस्परिक सङ्गठन ने सबसे पीछे लिख नारी की संस्कृति भम उपन्यास का मूल - विवरण है।

उन विवरण का भारतीय समाज-युग का भारत-शुभार के पारस्परिक साधन है। अब तो हौरा संभाल चालन-छाया का आर्थिक जीवन, पुलिस बना था। उनकी परस्परिक सभ्यता के प्रभावित वैज्ञानिक घोर नवीन ने प्रतिज्ञा को नाभिक उपन्यास की रचना की थी।

अनुलोक उपन्यास का आदर्श पान है। वह विवरण है। विवरण के प्रति दाननाथ उसका भीतर है। लोगों की भावनाओं की पुरी और स्वतंत्रता की सरल क्रिया है यह प्रेरणा है। क्योंकि प्रेम का लागत शासन कूटराय के है। इसके साथ समाज-युग की प्रतिज्ञा कर लेना है और दान-दान देने है। प्रेरणा के विवरण में स्वयं पक्ष करता है। दाननाथ कूटराय के यह शारीरिक न्याय करता है यह प्रेरणा से हमारे प्रेरणा है। दूराचारी कला प्रेरणा उस पर धौरे छाता है और एक दिन बालकी की कुल्हंग्रा की कुदेशा भी करता है। इस प्रेरणा उसे बुरी भी चोट छुपाना करता है। बन्द पर पुराण के भावनात्मक में शारीरिक केशी पक्षी है। कला की तत्त्व सुभाष एक बालकी और धूल घरित बालिका नारी है, जो अपने दुराचारी और पूर्वी पात्र का बटकर विरोध करती है। पुराण के दिशात्मक होकर वास्तव में उसका पति बुरा भी जाता है। यही उपन्यास का शुशान्त होता है।

इस उपन्यास में प्रेरणा ने विवरण - संस्कृति को उठाया है। पुराण एक कला लाते - पीले पर मे सुविचार संस्कृति के जीवन भी रही है कि एक दिन क्योंकि उसका पति मृत्यु के नेत्रों में गंगा ने अन्तर्भुक्त मर जाता है और पुरान विवरण को जाता है। उसकी हल्ला पर उसे लाते कवि प्रेरणा उसके नाम वार हबर रखे अनुशासन किया जाता है।
पूर्वता कर वचन पर है वाता है और उसके उसके कहायास्तय का कहाय
उद्धवता वैसौत बहान बात सी है तेलिक ब्रह्म नहीं होता और कब्जा
में पूर्णार्क को विकास का कायम लेना पड़ता है। उसकी भसु पर्वतका के
पूर्णाठ में बानिक मिस्त्रता है। भसु पर्वतका भरान भरान में उत्तरातन
रूपियाँ का कोई हिस्सा नहीं होता तथापि विभिन्न विभिन्न की वानिक
- बहान की तलाश में दर-दर पहुँच पड़ता है। पूर्णार्क जानती है कि
- "मैं मरे स्त्री है क्या मैं, बुझी मैं, पौराणिक में अक्सर बुझा होता है, तथा विशेष
उसकी दुखात है, जहां पर्वत के कदना स्त्री में बही गुण है, यहां स्त्रियों ही
की जोड़ी है।" 1

'प्रतिज्ञा' मनोविज्ञानिक व्यावहार पर 'बहान' के बहुत बाज़े है। इसके
पाठकों के मनोवादों का चुंब कहिया है वुमिन्त का उपनामा है बहुत
बुझी गाहत है। कहां प्राप्त मानवालों में वानिक स्वरूप की भली देता है।
दोनों के स्वभाव विशेष है, तथापि वुमिन्त बहुत को विधान पूर्णार्त नी
बानिक मांगहनें मानती है। भसु पूर्णार्त है कहती है - "मेरा बिठाइ तो भर
पूर्णार्त है हुआ है। लक्ष कहने प्राप्त की बनवू हूं, भसु बढ़े सुब की कल्फा
कीन कर देखता है? मनवान है विषालिक मुझे जन्म दिया, लम्बा मे नहीं वाता।
हस पर मेरा कोई बनना नहीं है, बल्कि मेरे जबड़ेरी पूछी हुई है, मेरी पाने-
जीनें की निकी को परवा नहीं।" 1 इस वाक्य है वुमिन्त का वाचनिक
वननार्त वांगिर है, वह व्याख्या पति-प्रेम देने को लागू हिती रहती है तेलिक पति
की निष्ठुरता ने उसके विवरण का ही विष्फुति कर दिया है। वहाँ तक कि
भास प्राप्त का उसे हेह करता है तब उसकी व्याख्या और बढ़ जाती है - "पति
के हृदय को पाने के लिए वह नित्य तथा "सिंगार" कहती थी और भसु भरीपति के
पूर्ण न होने है उसके हृदय में व्याख्या - की दशकी रहती पही। धी के घृटि है
मनवान लो व्याख्या का स्वामानिक ही था, वह पानी के घृटि है नी मनकरी
थी। कहानी पात का उसी वस्त्र प्रेम जताते, तो उसके जी में वाता, धी में
हृदय मार हुई। पाव में यही क्षा का पीछा होती है कि कोई उसपर नमक
हिऱ्छे। 2

1- वही : पृष्ठ : 35
2- वही : पृष्ठ : 51
वस उपन्यास में पूराण, भगवान और भुमित्र के वादों के आदर्श को लेकर ने बच्चा उमार है, कुशल कुशल और भृगु उपन्यास के व्यस्ताण्त विषय का पात्र है उनके वाद में ज्ञानाविक्षित नहीं हैं। कृष्णवंश की पादक-वाद्यवाचिता पर ध्यान हुए पात्र हैं उनका पात, व्यायाम और अपार उनकी अवस्था नहीं। बल्कि कृष्णवंश का वाद है। कुशा प्राराध का उदय प्रारंभित और बल्कि बुधार का अन्य उदय प्रारंभित कृष्ण की न्यायाविक्षिता को रोकता है। विषय समस्या का निम्नाना पी एक वाद रहस्य नात्र एक कृष्ण की धुरा करना समस्या का समाधान नहीं है। वीरराज रक्षक के स्थाने में - "सृष्टि वीर के अन्तराग में कृष्ण की धुरा करना समस्या का समाधान नहीं है। वीरराज रक्षक के अन्तराग मे एक सत्तात्मक समस्या की धुराओंको हेंग से सुधारने की कौशिक की है। यद्विष उन्होंने विख्यात सत्तात्मक व्यवस्था की, उसके रूपी-रिवाज की धुरा तक नहीं, जब-वह टीप-टाप करके उद्दी में सुधार करना अभाव है। यद्वि न समस्या हट धुरा है और वा पात्र उसर है।" 1 फिर यह उद्य धुरा देना नहीं। किया जा चकता कि इस उपन्यास में प्राचीन कृष्ण-नाम भूल, अवध और पुस्त मात्रा तथा रोचक कहानी का कृष्णवंश की रचनात्मक ताम्भा के विचार का स्वाभाविक प्राप्त है।

गौराण्ड दून :-

"कृष्णवंश की गायक व्यायामान्त्रिक उपन्यास है। कृष्णवंश ने एक पहले उद्दी में ताबारे हुले के नाम के लिखा था। धृत रामायण का आलम 1916 मानते हैं लैकिर वास्तविक उपन्यास का 1917 है। 24 जनवरी 1917 को द्वार-नारायण निमान के नाम लिखा कृष्णवंश का पारस्परिक इतिहास है - "मैं बाज़क एक किस्सा भिक्षु-भिक्षु नामी लिखा लिखा। कोई भी घरी तक पहुँच बुक है।" हस्ति वध है

1- वीरराज रक्षक : कृष्णवंश जीवन कथा और कहानी : पृष्ठ - 171
करने को भी ही नहीं वाहता। फिसा फिलवस्य है और मुझे ऐसा बताता होता है कि मैं अब्बकी बार नामिल-नवीनी नै सी कामयाब कर सकूंगा।" 1 और 8 अक्तूबर को उन्होंने नामिल हत्या करने की घूसना दी।" 2 "उनकी नामिल-नवीनी की तमन्ना हिन्दी की वजह के लिए तो जगानन्दकारी शाहिद हुई, हैलिफ उद्दौल मद मैं उन्हें बड़े साहब कामयाबी नहीं मिली। उद्दौल बाबाओं के लिए कोई भी पित्तारी और उसके साथ अच्छे मिले मैं कोई नामपंथ नहीं था। वनक्रो विषम, अर्धक और नियम रखना और लोग उसके बारे में बहुत लिख बुकें थे और बहुत कहना लिख दुःख था।" 3 कहना न होगा कि ये लोग एक दिन तक 'नागरी-दुःख' की प्रेरणा रहे होंगे, जिसका हिंदी रचनात्मक "स्वायत्त 1919 में प्रकाशित हुआ। " स्वायत्त के बाद जो बाद 1907 में प्रकाशित हुआ था और जिसकी कहीं कोई चर्चा न हुई थी, मुख्य नै यह पत्ता उपयोग का, जो हिंदी में प्रकाशित हो रहा था।" 4

"स्वायत्त में ही प्रेमचंद की बाबार इंग्लीश की कलात्मक विनियामक का भ्रम शुरू होता है। अन्यथा सामाजिक विनियाम के वर्तमान के प्रति मानकी वैतन के विक्रेताओं क्षेत्र थे। वर्तमान के तक पत्ता होता था, और जो समस्या होंगे तो कि मात्रकी जमकर ये मनुष्य का मार नी रंगवार-पेशें ना बांधा जाता है। हमदी दिनों उन्होंने विक्रेता धर्मों की ही पित्ता थी, किस्सा नामक मुख्य है फिलव बड़ा चौरा करता है और दुःखारा बाहुल्य की भरण को संघर्ष का बानान के लिए हमदी लघु सदियों नहीं कहा जा सकता। उनके रचनात्मक वैतन का प्रकाश निकली तब ये हैं। रहा था उस जाने के लिए "वैतन व्यवस्था के प्रति व्यक्त-रूप उनका 1919 में प्रकाशित "दौरे कीम : दौरे जिदद ( गुरुनाम क्या : नवा क्या ) " नामक लेख अंगुल है - "वह हुड़ बाराम वे बसने पेट यूरगी, बाहे दुनिया मूढ़ी मरे, बुड़ हेकी, बाहे दुनिया मूढ़े के बाहु रोगे। वाल उसे लाए कूदँ की पुन हो जाये और लाहरूहूँ के निकट की तो उसे दूराहं का बूत करने में भी फिका।

1- ब्रम्हत राय : कल्प का विपरीत : गुरुस्त - 170
2- "वहीं " " गुरुस्त - 170
3- "वहीं " " गुरुस्त - 183
4- "वहीं " " गुरुस्त - 182
न होगी ....स्वार्थ-पत्ता उसका रूप, उसकी पुस्तक, उसका रास्ता जब हुआ है।
धरी मानदीय मायावी, सारी नैतिक प्रती यह स्वभाव के रुप में वहीं यह उसे भ्रूण देते हैं। 1 यह प्रथम कुश्त-स्वभाव को अभिव्यक्ति करने लायक ठीक सरलता की तलाश उनकी प्रति वैतन का अब तक कर बुधी थी।

प्रथम नांद मनाते हैं कि कई नी परंपरा स्वामित्व: दुरा नहीं होता बालिका वाणी परोस्स्वाभिता उसे दुरा बना देते हैं। द्वारा मनुष्य, स्मृतिक मात्र बल्कि बढ़ाना विशेष वास्तविक है। क्षमानारि बस्त्रामाणिक लगती है। वेद नांद का 
स्वाभाविक है - "क्षत्रियापुरे के कुले फल की न की सभी को करने पड़ते हैं,
लेकिन और लोग दुरा करने पर पसेरते हैं, दरोगा कुक्षार्ड वचनी मलवाहियों पर 
पसेरता रहती है। " 2 दरोगा कुक्षार्ड एक क्षमानारि और प्रति देशत वास्तवी है, उनकी 
क्षमता और नैतिकता के कारण ही उनके वर्तमान और मातत्त्व उनके दुन नहीं 
रहते क्योंकि वे स्वयं दुरा कर्म वेद्यान है। यही कारण कुक्षार्ड की प्रस्तुती 
दिन-दिन तरह है वही है और अब तक वचनी ज्ञान कन्याके हर पीठे करने 
को पी रहने ही नहीं करते। दैज़ा के लिए जन्म का विवाह पुराण था क्योंकि 
फली बार रिकार है वह वचनी ज्ञान कन्याके हर पीठे करने को पी रहने 
है और लेकिन जाते हैं कि निर्माण 
रूप में कुक्षार्ड करते हैं - "क्षत्रिया का प्रति विवाह पुराण" या क्षत्रिया 
कारण का हाल है। वह देव धुला, शिव लोगों के बुढ़ गंगा दुःखित, बुढ़ रिकार शुगा। यही वैदित उपाधि है। 
वेदांत यही वास्तव है। " 3 यह वाक्य में प्रस्तुत समाज व्यवस्था में क्षमानारि के 
प्रति विशेष गहरी विशेषता है।

"क्षमानारि में प्रथम नांद ने चौथी धार्मिक क्षमानारि का पी जीव चित्र 
लिखा है। पिता कुक्षार्ड के बेटे जाने के बाद, धीरा के नाम उपाधि वर 
सौजन्य गाँव जाते हैं - "ज्ञानी ही वह किसी गांव में पुराण, वहाँ बदल लग जाती। 
धीरा कारारों के यह कहते निशानौ जिन्हें वह बालकों में पसेरता करते थे। 

1 - क्षत्रिया: प्रथम: क्षम का विवाह: पुस्तक - 179-80
2 - प्रथम: क्षमानारि: पुस्तक - 5
3 - "","", पुस्तक - 7
वेदांतवां और ज्ञानमात्र बैंगनी यांग कर पहन लेते। नातार अपने बालको को नचला-बुलाकर बाँसी में काजल लगा देतीं और दुनि हुए यहाँ पहाड़कर बेलने को लेकर। विवाह के हजारू बूढ़े नास्तिक यह मूँड़ कटवाए और पके हुए बाल चुनवाने लगते। गाय के नारे और काहर केली है बुला खिये जाते, कोई बफता बखष्प पड़ाने के लिए उसके पर दबावाता, कोई बोलती ईंटाता। कभी तक उमानाय वहं रहते, त्स्त्वं परं ये न निकलती, कोई बरसे हावे ये पानी न परती, कोई सेत में न जाता। 2 खिणी बड़ी विधिवता है कि कमजोर वाणिज्यिक रिश्वति वाले ग्रामीण यह सामनी बुझता के प्रामाण्य में बफता काम दुःखों के करवाने में गर्द सफल होते हैं। वहां भी उमानाय को कोई लाखा पर-बर नहीं पिलाता।

वाणिज्य धुमन का विवाह दैलैज के स्मृति में 5) नास्तिक बुझती वाले क्योंम यहं दो-साह गजाच फ्रायाचे ये हो जाता है। एक तो बनेले विवाह पीयो जाकिया, दूसरे परस्पर रस्मियां भिन्नता की बजह है धुमन बपे दाम्पत्य-वीण में तालमेल नहीं बढ़ा पाती। वह बफता गांनेस्वयं, तबहड़ बढ़ै तथे पर नारी जुड़ा की तरहे बढ़ती है। उसका चिन्ताविचार समझौता बाली नहीं है, बास-पश्चिम का बातावरण उसकी युवा-जैतना को और उसकी धर्मिता को बारे वाणिज्यिक मुक्ताता है। नुकसान के मनोद को चुभ ये ठहरे-देखते हैं तो उसका पिपासु मन जंगलण पाता है। पश्चिम-पूर्वी की महिलाओ का महाभाग यह उनके दाम्पत्य को जहरोला बनाता है - "जिन महिलाओं के साथ धुमन उसी भी ती की वे बनी पायरों को हरेमनु-सुख का यंत्र सफल है। पति बागे है दी ही, कपोलों भी दो नदर आमूणाणों है, उदास बस्ती है खाते, उसे स्वामिज्य पाला खिलाते। यदि उसके वह सामुहिक नहीं है तो वह निकलता है, बपहिज्य है, उसे विवाह करने का कोई विषयक नहीं था, वह बाबर बारे प्रेम के योग्य नहीं।" 2 हस्ती शिम्पा बारे बैस्कर ने गजाचर के साथ उसके

1 - प्रेमचंद : छेड़बुड़ : पुस्तक - 14-15
2 - , , , , पुस्तक - 18
दाम्पत्य को कसम्ब करना दिया था। यह तक तो ठीक है है रक्षिता-
गृह वालाकरण में ही ध्यान की शेष हृदय हृदय द्वारे उसका भर फिर प्राप्त होता है। मौली की नस्ल की वैश्य का मान-सम्मान उसके वाल्मूसम्मान की लाल्ला को
उत्सर्जित करता है। मन ही मन वह फूलों से बस्ती तुलना करता है और बस्ती
को बाल्मूस पाता है। है रक्षिता का उदित मूल्या न उत्कर उसका सम्पाद, गृह
वैर विवेक उस गृहमूसम्मान को सह नहीं ला पाता और एक दिन-
बाल्मूस साहस के पर मान-तमाशा देखकर पीछे हो जाने पर जब उसका पाता उसके
बराबर पर जो जो की Whoa मानने को वैराक नहीं होता तब भारती
पात की ाक्ष में गहरा पर वे सक्से बाते हैं।

बिराकरा ग्राम को वाल्मूस पात की सामाजिक मांग के पिन
पूरा करने नहीं देता तब वह मौली वैश्य के ही पर प्रभा देती है। यह भी
वैश्य बनकर। वह वस्ती फुहाल है कुछ नहीं है रक्षिता तैयार करता है, वह बाल्मूस साहस के कहता है - 'आप पाड़े सम्पाती हैं कि वैर और
सम्मान की मूल्या बैठें बादशाहों ही को होती है, तथ्य दीन यह वह ग्रामिकों
को भूल वैद की गार्लिक होती है : क्या जन उनके पास वह शीत शहद करते का
कोई साधन नहीं होता। वे इसके लिए चाहिए, खर, रुपए फुहाल कर बैठते हैं।
वैद ने यह संगठन है जो बन और गोर-विलास ही मान नहीं है। मैं ना
निच यह बही भिन्न रहती थी कि यह बाद बैठे बैठे। फुहाल उत्तर मुक्ते मिलते हैं। फुहाल
उत्तर मुक्ते मिलते हैं। ग्रामीण काफी होती बार जी बिला। तैयार काफी होती बार जी बिला, तैयार
पूरा कर दिया, जुमाह बाद और ग्रामिका का पान दिला दिया। यह ने
उस जाने में न रहती तो आज में बरे कारौं में भी जो उत्तर मिला, उसने
पूरा कर दिया, जुमा बाद और ग्रामिका का पान दिला दिया। यह ने
उस जाने में न रहती तो आज में बरे कारौं में भी जो उत्तर मिला, जुमा बाद और
सम्मात आपकी राष्ट्र का पुरा पर वैद और प्राण
पुरा। 1 बाद के विन कहने में प्रतिया मांग का बौध्य पालने वाले सरकार के
बाल्मूस-भागतों का परिचय धीरे है और उसके वैश्य जीवन समाप्त के पीछे प्रेरक
पूरा पर प्राप्त भी है।

1 1 वैद के विन कहने में प्रतिया मांग का बौध्य पालने वाले सरकार के
बाल्मूस-भागतों का परिचय भी है और उसके वैश्य जीवन समाप्त के पीछे प्रेरक
पूरा पर प्राप्त भी है।
"बैशाखसन" में प्रेमचंद ने नारी जीवन की प्रतापिनता पर भ्रमार बताया है। "बैशाख-समस्या" की बुद्धि मे भी यही समस्या है। पुरुष के बावजूद के बलात्कार नारी की आर्थिक दुरस्ता नहीं है। बैशाख-समस्या का भी कारण यही है। बैशाख-विरोधी विवाद बनाने की वजह और यही परिस्थितियाँ नारी को बैशाखा बना दी पर वापस करती है। बैशाख-नीति को पाँच दे - "बुद्धि वार गुप्ता की दाल-मण्डली होकर गुज़र रही है, और हर बार बालाएं तरक बोली पर बमा शैर में स्फोट पड़ने के लिए बेटी हुई बौरतियों को देखकर उनका जी कारण उठा है और हर बार उनके मन में स्फोट पड़ा हुआ है। इस कारण में कुछ कोई बोलता है, और वहीं वहीं खास, वह-बहली का शोक या बैशाखी शिकार हैं। ये बात बार उनके मन में यहीं कहा है कि नहीं, इस कारण में कुछ कोई बोलता नहीं है, कबीर ये मी बैशी ही है कोई फिर ये बौरा होता है।" 1 बहराहार, प्रेमचंद ने यह निष्कर्ष निकाला था कि मुख्य कारण नारी पर आर्थिक और सामाजिक अट्ठारह है। पुरुष प्रसन समाज में बैशाखा बनाना शौचित नारी की विख्यात करता है।

वैशाखसमस्या के उपर्युक्त में हिन्दू सम मुस्लिम संस्कृति विभाजन रूप से दोनों हैं। दोनों की समाजी में नारी को वैशाखा बनाने की दृष्टि समाज की है और कोई भी वैशाख नारी को बैशाखा होने के बाद नहीं वापस लाते हैं। यह निष्कर्ष निकालता है कि बैशाखा, नारी की मुख्य समस्या नहीं है। यह रूपरेखा के बजाय किसी भी रूपरेखा के बजाय किसी भी उपर्युक्त या अन्य देशों की राजस्व शिक्षा नहीं है। यही हमें देखता है कि हिन्दू में हिन्दू-वैशाख वर्तमान से बाहर नहीं है। बैशाखी की वैशाखा के बाद नहीं वापस लाते हैं। यह बालाएं तरक बोली पर बमा शैर में स्फोट पड़ने के लिए बेटी हुई बौरतियों को देखकर उनकी जी कारण उठा है। पुरुष प्रसन समाज में बैशाखा बनाना शौचित नारी की विख्यात है।

1 - प्रेमचंद : कथा का सपाही : भूष्ण राव : प्रेमचंद - 176
2 - प्रेमचंद : बैशाखसन : प्रेमचंद - 121
पर राजी नहीं होता और बरात छूट जाती है। वह वही सदा है जो वैष्णव-मुनि के प्रेम में पाए हुए।

उपन्यास की बध-मारा में उपरुष का बिन्दु कह तक प्रेमवंत की शृंगारपरिवर्तक है, बाद में उत्साहपीत हुए उनकी आवाज द्वारा हाथी होती गयी है। वैष्णव-सम्प्रदाय के निदाम का सुकार की आवाज ही है कि “क्योंकि उन लड़कियों की आवाज तौर पर शायद कोई और कोई अपने साथ ही उनकी परवरिष्ट की शृंगार भी निकल जायेगी तो 75 फ़ीसदी लोगों का है जो कुछ कर रहे हैं।”

वास्तविक शान्तियाँ तो सम्प्रदाय की जड़ को उलझाने में है न कि वह यथा और कौन तलाश जाते हैं: शहर हैं। बाहर उनकी बस्ती बनाना यही व्यवहारिक निदाम है।

मुनि वैष्णवात्मक होते हैं और वही बन शान्ता के लाभ विश्वास में जगा है, इसके उसकी क्षेत्र वहाँ भी उसे पाता नहीं है।

शान्ता का भाग बदल है। फूलहरा नाम बालने लगा है और शान्ता है शायद करके मुनि क्षेत्र वहाँ भी लगा है। इसी मृत्यु उक्तियों हैं करके शान्ता के लाभ शायद करके लगा है। यह है, जो शान्ताओं को हारा है उसे बता देता है और मुनि सेवाकरण बहाने लगता है।

प्रेमवंत की मृत्यु सम्प्रदाय की व्यापक परिषद थी जो वैष्णव सम्प्रदाय का आदर्शतम सम्प्रदाय था। जो क्षेत्र में उनके सम्प्रदाय की श्रीमान् थीं इस प्रेमवंत की समाप्ति सम्प्रदाय का रूपांतरण कर सकते हैं।

नारी की स्वाधीनता और सम्प्रदाय रचना का प्रेमवंत के वाम समाज़क और राजनीतिक समस्याओं का ही स्रोत है। नारी की स्वाधीनता देश में एक स्वाधीन करते, कायम हुए बिना स्वाध्वर नहीं। वे शक्तियों निम्नों ने मुनि को

1 - प्रेमवंत : सेवाकरण : पृष्ठ - 121
पहले वेस्या बनाया, पीछे कठौतकी ककरा उसे गँगा की तरफ दैला, समाज पर
वफा मृत्युज जाने हुए थे : वहाँ विरास्त क्षण, समस्या का सही साधन ही
कहा था, लेकिन पहले महायुद्ध के दिनों में स्वाधीनता वार्तालाल बहसात्तै और
कमजोर था। स्वातंत्र्य इसे वित्त नहीं देता था। वे समाज की प्रभावर
रोकने वाली शक्तियों को देख रहे थे, लेकिन पुराती व्यवस्था को बदलने वाली
शक्तियों उनके साथ तब मैदान में बायी न थी। 1

"स्वातंत्र्य एक बड़े पाट का लेकिन क्षात्र उपन्यास है। इसी समाज
के दूर शारणक बाकी विशारद, बमील, समाज पुंजार, बुरैदपौर नेताजी तथा
वेस्या आदि तमाम कार्यक पात्र है जिसे मुख्य समाज का चित्र दी सत्यिय ही
गया है। स्वातंत्र्य शासन, मान्यता, विचित्र-विचित्र तथा कल्पना की दृष्टि से
हिन्दी उपन्यास में एक मुग्नतकारी परिवर्तन था और वेतु की मृत्यु के रूप में
प्रेमचंद के बढ़ते महान उपन्यास "प्रेमचंद" की एक भूमि थी।

|--0--0--|

2- मध्यवर्ती उपन्यास :–

आराम्भिक उपन्यासों में वहाँ प्रेमचंद का विशारद-चौरंगी नगरीय जीवन
tक सीमित रहा है वहीं उनके मध्यवर्ती उपन्यासों तथा पश्चवर्ती उपन्यासों का मुख्य
विशारद-चौरंगी ग्राम्य-जीवन रहा है। प्रेमचंद के मध्यवर्ती उपन्यासों आराम्भिक
उपन्यासों की तुलना में व्यावहार, संवाद, विचित्र-विचित्र तथा वातावरण की दृष्टि
से वार्षिक क्षमा के दृष्टि से व्यावहारिक है बोल खेत की प्रभाव-व्याप्ति के साथ कस्त: पुराता
प्रभाव करते गए हैं। उनके मध्यवर्ती उपन्यास लघुमूलक हैं जिनमें नासिकी
द्वारा में कृषक जीवन की जानकारी और इसके उदय की कामयाबी, विचार-

1 -वेस्या विलास शर्मा : प्रेमचंद और उनका युग : पृ. 40
कस्तो तथा कन्या सामाजिक सुधार हैं। उनके मध्यवर्ती उपन्यासों में निम्न
उपन्यासों को शामिल किया जा सकता है:

प्रथम हम अनुसार,

स्वतंत्रकाल 1919 और प्रभातकाल 1922। भारतकाल के
बाद प्रेमचंद मैं विषय परिवर्तन हुआ। प्रेमचंदे के नर्मोदक के
ग्रामीण कृषि की विद्या स्वास्थ्य के इस्तेमाल में गाँवी की कृषि हालात की विधि विधि
- "इसके अलावा" फरवरी 1919 में राहत
दिन में द्वितीय सप्ताह में दैनिक वायुमंडल की तारीख 30 मार्च निम्न था जिसे विद्युत 6 ब्रेक कर
कर दिया गया, इसका कारण यह था दूसरी हालात की लहर भूकंप देश में फैल गया। वास्तविक प्रेमचंद बाहें नहीं आए।
अदानदे के नेवल्स में हुई दिल्ली की हुमायूँ के बारे में टाइम्स वार्ड हापान विचार
1919 स्थापित है - "हिंदू-मुसलमानों के लाभ के लिए और मुसलमान हिंदूओं
के हाथ से पानी लेकर तो रहे थे। हिंदू-मुसलमान एक इन बुद्धियों का गुल्म
दान था।" 2 वांकिराक स्वागत का अनुभव विजय थार्क थार 13
ब्रेक 1919 को वाल्मिकी प्राण बाग के एक भाषाक्षण के रूप में दिया।

प्रेमचंद के रचनाकाल में उक्त घटनाएं प्रेमचंद की नजरों में गुजर रही
थी। बार प्रेमचंद गाँवी-बाद के लाभ है लेकिन इस मार्ग की परिणति है वो
यादीखो थे जिसका देखते है प्रेमचंद में कहते हैं: हालाँकि उनकी बायस उनें गाँवी
बाद की फार्म नहीं देती फिर के बैंड की हालात की धर्म
बाअ से देश की बिगड़ी राजनीतिक शासन का लेखा नहीं प्रस्तुत करता है - "हिंदी

1 - कपिलराज : प्रेमचंद का विपरीत : पृष्ठ - 192
d - "","" : पृष्ठ - 193
का तो वह उप्रम राजनीतिक उपन्यास है ही उल्लेख के "वांगद मठे की हृदय के बाद भारत का भी उप्रम राजनीतिक उपन्यास है।" 1

'समाज' पूर्व विपणनात्मक परम्परा है हटकर लिखा गया उपन्यास है।

इस उपन्यास का नामक हृदय व्यक्ति कस्तिया न होस्फु भारत का बहुस्क मुक्त कर है। मातृत्व ग्रामीण समाज का इतना ही है जिसमें आदेशी दासहरा के विरुद्ध स्वार्थवादी कृषि की माती-शाति बताते दर्शनी है गई थी। लक्षनहार मै एक बुधु वाँचारी की हृदय की घड़ी पर है दौल रूप से नहीं गहरा। मनोहर गाँव का एक लोक मंदन का किष्ठ है उसकी वाणिज्यिक दशा का चित्र भर्सेंद नेह बुझारा बीचा है।

'चौके मै एक घाँटी के तैल का बिलास जल रहा था: किन्तु कल मे बुढ़ा हलता परे हुआ था यथा उसका लक्षात्मक बेंगु गोला था। उसके में ही घाँटी की घाली थी बुढ़ा की मार्गी और जो की कई मौटी- मौटी रौटीया परस पीसी। मनोहर यह मार्गी रौटीया तोड़-तोड़ युथ में रखना था तैयार कोई दमा का रुप है। हलनी की रणी है वह पास भी बात।" 2 जबकि मनोहर है भी गिरी लालते के बिन्दु की भिड़न है। उसकी यह हलत के लिए वह शामन्ती व्यस्त है उत्तरधारी है जिसके समाज के कृषि एवं कृषि कंड की शैक्षित और शैक्षित वर्ग में बदल हुआ है। लक्ष्य युवता मै भीन सोन्नाते वाले की बफ़टी नहीं है। माता पर पाना न बुढ़ाना पर किष्ठनी की बेतकल किया जा सकता है। व्यवस्था के बनते ही धरकारी अपक्षारित तथा अनन्दीय के पारदिर्शी तामसिक कीट-पिपले की तरह देशातो मे हा आते थे। 'शहरी' मे ही उनका दास नहीं गलती, या गलती है तो बुढ़ा हुआ। वहाँ प्रत्येक वस्तु के लिए उन्हें धेट ने हाथ डालना पुस्ता है, जिसमें देशातो मे जेब की जगह उनका हाथ जरा बोटे पर होता है तो भिक्षी दोनों किष्ठ की गदन पर। बिष्ट रो-दुध, शाक-माजी, गांव-माजी वाले के लिए शहर मे उमा थे।

1 - रामदीन गुप्ता : प्रेमचंद और गाँविकाण्ड : पृष्ठ - 168
2 - प्रेमचंद : समाज : पृष्ठ - 15-16
किराणा स्वप्न में पी दस्तन नहीं होता था, उन फायदों की यहीं केवल निश्चित और बाज़ु के बल वैसे है रैलः फेव हो जाती है। निश्चित या बसती है, लाते हैं, बार-बार लाते हैं, और जो नहीं ला देते वह पर सेवा है। वी दे पर हुए आकाश, दून है पर हुए मटके, उफ़ी और लकड़ी, पाष और बारे जही हुई गार्दियों सहरों में बाने लगती है।... देखते वालों के लिए वह बड़े बच्चे के पिता होते हैं, उनकी सामर का जाती है, पार लाते हैं, बेगार में गढ़े जाते हैं। वातावरण के दारुण नियंत्रण वापसी से बाय़ा का यह छात हो जाता है।^

केंद्रीय का प्रमुख अनुपाद का शौकण्ड के हाथियार के रूप में प्रशासन होता रहा था, जिससे क्रुद्धता समुदाय को प्रतिपादत: कर्मीयों के शोषण करना पुरा है जिसने बनता हुआ सूत्र केंद्रीय प्रशासन तक बुझा हुआ था, जब राय कक्षणद जान-शेखर दे करते है।

'यह जानकार नहीं है, हरे विवाह कला मूल है। यह निरीक्षण दलाली है। हर मूलिक पर मैरा क्या विवाहित है। जने हरे विवाह के नहीं सिंहा।
नवाबों के कमान में रिकी सूत्रिय ने जानकारी बूझकर करने के लिए नैंडे नामक निर्यात किया था। नैंडे पिता पर नी नवाबों की इंप्रेशन रही। जबके बाद केंद्रीय के भाग बाद नवाबों की भांति बाद यह है नवाब के विवाहित प्रशासन के यथार्थ है निकाल गया।
लेकिन राजकुमार के कम, प्रशासन ने तन-मन है केंद्रीय की विराजमानता की। शाक्त स्थापित होते थे यही बहुत पुराना विवाहित फिर फिर गया। यही है
रियासत की प्रशासन के है। हर केवल लागत बूझकर करने के लिए राजस्थान गये हैं।'^

तब यह अप्रसंस्कर हो जाता है कि तनी के बाद एक अवस्था के शौकण्ड का बहुत सूत्र केंद्रीय के यथार्थ है: कर्मीय शौकण्ड के हाथियार और बलात मात्र है।

'प्रशासन' के कर्मीयों की तीन पीढ़ियाँ का उंगर दिखाया गया है। लाता जटाकर के कमान में समस्ती वाटियाँ अपने अन्य रूप में स्थापित है।

1 - प्रमख : प्रशासन : पुस्तक - 53
2 - , , , , पुस्तक - 279
पले। तब जीमीदार वो बालामियों के झूल-झूल का खुशाल रखते थे। मनोहर कहता है - "मैं तब की बात बनाते थे। तब जीमी जी जी की धैन यादों पुकार जाती थी। मुझे डराता की झूल-झूल की नहीं करते थे। क्योंकि काम-काज झूला था, तब हमें नैतिक फिल्म था। लड़कियाँ के व्यापार के लिए उनके यहाँ से हाथी चारा और 25 रु. 0 बन्धा हुआ था। यह सब जानते हैं कि नहीं। जब वह कभी लड़कों की तरह पालते थे तो रैख की हैदर-खुदी बेगार करती थी। क्योंकि वह बातें तो गयीं, वह एक न एक पत्ता लगा ही रहता है। तो जब उनकी बारत है वह कहता है। तो जब वह कुछ हस्ताक्षर के पुत्र जाने करते हैं। जानेकर हूडीवाली ज्ञानवाद को खानी है। बालकों से उसका सम्बन्ध मध्य शोषणा का है। वह पौर जगह मैं खजाफ्ता ला लाना का दावा करते है नहीं छूकता। किसानों का मुख्य क्षेत्र जानेकर की व्यवस्था ते ही है।

लीला की लोको मायारिशक को है जो समाजवादी विचारों के अनुसार है। वह प्रेमशंकर की ही तत्त्वज्ञानी मान्यता को कि जीमी उसकी है। जो उसे बोलता - व्यावहारिक राज देखर फिसानों को उनकी जीमी का स्वामित्व प्राप्त है। तैयार व्यवस्था के इस उलटफेयर में फिसानों की नवीं पीढ़ी का संघर्ष और रेडो वी का आना लारा भी है। जीमीदारों का हड़प्पा परिवर्तन नहीं है।

प्रेरणा ने जीमीदार की के चारिटी-बिनायक में पी यात्रिक झूल-झूल के नाम का लिया है। 'प्रेरणा' के मौजूदा झोलाडों में जानेकर के कला राज कलानंद एवं गायकों की जीमीदारी की दैनिक जी के मिलती है। राज कलानंद जीमीदार की व्यावस्था की तरह जानते हैं। वे स्वीकारते हैं कि - "हम पालू मिट्टियाँ है, हमारे पैसे शब्द-शीन हो गए है। हमें कह उड़ने का वान में है। हमारी उड़िया सदैव जोहे में फिसरे के कुड़के और प्लास्टिक पर प्लास्टिक है। बस्ती स्वामित्व का मोटे तुल्लक पर बैठ दिया है।" 2 गायकी भाषामियों

1 - वहीं  पुस्तक - 18
2 - वहीं  पुस्तक - 279
पर तथ्य की आवश्यक दुराशियाँ मानती है। जबकि जानकीकर बने का अभिव्यक्ति या पत्र है। पौर स्वार्थी बौद्ध पालण्डी है। सम्बन्धित के पीछे वह पार्श्व के साथ व्यक्तियों, स्वयं स्वयं की हत्या का प्रमाण बौद्ध पालन के राजी वे कथाशीर्ष की गलत नहीं समझता - वह विज्ञान कार्य है तथा ही स्तंभ बौद्ध निविड़ भी है। यह स्वयं के किश्तानों का गुरु दीक्षिष्ट दीक्षित है लेकिन उनके सामने वह बने के प्रेमों में दुख नहीं होता। उसे सानून कारण मूर्ख की बैशाखियों में बढ़ा रखने वाली तालमेल कौशिक राज की है। ¹

कलराम विश्वासः कविताओं का अभिव्यक्ति है। वह बने एक नवरात्रि की दीवी किश्तानी बैठना का ही विविधता रूप है। मनोरंजन जयंती वह मानता है कि - "कीर्ति कोई काटू है न भर्मीता कोई होता है। यह कोई देखे नहीं है। जब कौटि-कौटि लागा पुकारते हैं, तो वायु बापों बापों।" ² वहाँ उसे जानकीकर के पास चम्पा मार्गने पर विवाह होना पड़ता है। उसे भी बने बैठे को परेंटी देखकर विपञ्चित्र को चलता देता है वहाँ अगरी बैठनी दरों लगता है। उसके भी भर्मीता के कदला स्त्रियों के हाथ में गाँव लगा की हत्या करवाकर लेता है, वहाँ वात्स्यायन है लाल गरीब वाल्मीकि हत्या कर लेता है। उसके भी तत्त्व: केवला का निर्देश विश्वास बैठारान है। वह धार्मिक कृति बौद्ध भिक्षु राजा दे परिचित है। वह बिभिन्न करी बोली गरीब का गरम मारकर नहीं देख सकता। उसकी मान्यता है कि "जी हमसे वासिक काम करता है उसे हमसे बकवाड़ा शाना चाहिए।" ³ उड़की मानववादी बैठना है जीवित वाले मयमत है जाता है।

जानकीकर लक्ष्मण के बासाधिकारियों पर बहादूर-धनात्मक का दावा करता है। बैरिक दे कृष्ण किशोर में शिकित होकर बौद्ध किश्तानी का सार्थ देते हैं जीत: बिखर नींव की जीत होती है। गाँव में अस्ति ठूलो जाता है।

---

1 कैराम विश्वास शरीर : बौद्ध बौद्ध उनका युग : पुस्त - 49
2 - बौद्ध : बौद्धिक युग : पुस्त - 12
3 - **, ** : पुस्त - 60
"विशेष वैदिका विश्वासांतियो का नी उपयोग परिवर्तन हो जाता है। वहाँ गाँव मायाशकर देखा है कि "कंव लघु कृषि द्रमा के गांव मैं रामायण है।" ¹

ग्रामीण पाठार्थ देखार कौंर विकासी की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। कौंर गाँव के सुन-सुने वह बहुत ही गोपाल देवी और विकासी वक्ता दीकान के लिए दुकान चलाता है।

प्रेमश्कर गाँवीवादी सिद्धान्ती में बने ही खिलपटे एक चार्ट है। वे किसी भी एक के लिए सत्याग्रह का बहारा पकड़ते हैं। लेकिन गोपाल की लगना नियुक्त कलात्मक पैगम्बर के बलवाने के अनुलक सत्याग्रह को की ब्राह्मण नहीं करता। वे समाज सेवा के लिए प्रेम्य भाग का दान करते हैं। प्रेमश्कर कौंटर-प्रश्न वादा के विवेचक पाठ हैं।

प्रेमश्कर में गाँवीवादी आदि के कारण घटनाओं की बातों को प्रेमश्कर के वाद-पाप रूप आता वायु है। त्रित्य नीति के अनुसार, प्रेमश्कर ने वातावरण के लिए, धर्मात्मक वास्तविक हृदय हृदय वस्तुतः बनती ऐसे वृद्ध लोगों का वातावरण "प्रेमश्कर" में ईश्वरास्पद करना लगा एवं होस्ती वृक्षारो-८७० वातावरण जीवन की आवाज पर नौकरी डावाकर प्रेमश्कर में शामिल होता जानने वाले घटनाओं के सामान्य है। फिर भी यह उपन्यास का महत्व क्रमशः जीवन का एक सम्पूर्ण महाकाव्य विश्वास विशेष ही है।

निम्नलिखित:

"निम्न" एक संगीतिक उपन्यास है। 'विजय', 'प्रतिज्ञा' और 'शैवाश्चर्य' की ही तरह यह उपन्यास का विषय नारी पति नामक है की कथा है।

पूर्ण-स्वाभाविक समाज में जरूर वर्णित का एकाधिकार पुराण के खास की नवीन दृष्टि वस्तु वर्णित की वीज जैसी है, जिन्हें वह ऐसी मान्यता के एक रूप में लिखा है।

¹ - प्रेमश्कर : प्रेमश्कर : गोष्ठ : 410
परम्परा को बन्य देख कर नारी की परापति बनाया है। इसी यथार्थ की प्रेमचंद ने ब्याह-विवाह बनाकर इस घोर यथार्थवादी उत्पन्नास की रचना की।

तब नारायणीय सामाजिक व्यवस्था में बदलाव के बाग्ना का चौंद था। गांधी की का कश्यप सार्वधक्क व मड़ान सामाजिक बदलाव की नहीं सामाजिक वैज्ञानिक उपाय उन्होंने और यूग्म प्रयास सामाजिक व्यवस्था को विभाजित के रूप में न ही क्षमता था। प्रेमचंद ने "निम्लिना" में इस दृष्टिकोण से 'उत्पन्नास' को सामाजिक ज्ञाति का जालबन्ध किया है।

उदयमणु एक प्रति क्षत्रिय वकील है। बेहोश निम्लिना की शादी घूंघ-गाम से खरा बाहर है। उनके मुख्य कार्य वातावरण मानसिकता ख्यात के लिए बहुत कह बहुत बात को बेचने का ब्रजमुख है। वह गांधी वात्सल्य भोजपुरी की प्रत्याशा में मलबे बना देने के ही समक्ष जोड़ने का लेवार है। वैसों में उदयमणु की भूमि ही जाती है और पाँच रामन फिरे की शर्करा में मलबे पुकार जाते हैं। इसमें उनके बेटे मुदान मौलन की भी सच्चता है। वह कहता है - "कहीं ऐसी जास शादी
करवाहे कि तुझ रूप्या भिले और न यदी एक लाज लग तो बाँट हो।" 1
उसके दिशातिच में "कर लाये तो किसा कि पिछा देगा। मुक्ते वह गांहिया भी चूनारतौ से बहुत न मलबे। तथापि गाय की लाल तिहूं बहुत मलबे होता है।" 2

निम्लिना का विवाह देहूँ के भाग में कराई, तीन पुर्ती के पिता, मेंडार्म और धवारी के रौगी छुटी तोता राम भी बहुत जाती है। पन्नु वर्षाया मिलिना पहले पिता के उपो देख के पति की पत्नी, तीन बच्चों - जिनमें एक उसका हुज्जुर है - की पियारा, और इस नाम राजसिंह के गुरुवते के बाथार की गुरुत्वाली घरी गुरुत्वाली बन जाती है इस सम्बन्ध में दाशितियाँ की निवाशों में उसकी तनु-उम्र की भाषिश बाहेर बनती है। और वह समय के
पार होती की कठोर बन जाती है। उसका बनेला दाभरत की वह टूटी नाव
है जिस पर वह विवाह दुरदृष्ट दिले स्वर्ग में खानारु दुई थी और धन-दिति तरह
कहती हुई नाव दुध गई थी।

1 - प्रेमचंद : निम्लिना : मुख्य : 48
2 - , , , , मुख्य : 48
उसका मन क्षान्त होने लगा। बप्पा रुप-यौन ही उसके लिए जूरी मजाक बन गया था। वह जब - "वस्त्रामूलरणाम्" हे कहता होकर बाहर ने सामने लहरी होती और उसमे बचे लोगों की दुःखमापूर्ण आया देखकी, तो उसका इतयाद एक सुंदरण कहना है तहत उठता था। उस वक्त उसके इतयाद मैं एक ज्वाला ही उठी। मन मे बात उस पर मैं बाग लगा हूँ। कपील माता पर प्रङ्ख बाता, पर सबै वापस हो जाते हानार निर्षराय तौताराम पर बाता। वह सदैव यह बात थे कला करती। बाँका सवार वहें नदु-टटु पर सवार होना का पहला करेगा, वाहे उसे पैठा ही कहा न कहना पड़े। निम्नलीला की दशा उसी बाकी सवार यही की थी। ¹ वह परिस्थितियों मैं समकृता करते का प्रयास करती है। लेकिन वह समकृता उपरी ही हो गई थी - "इतयाद रोता था, पर मूल पर एक का रंग परता पूरा था। तजसका मुंह न हैलाने को वह वाहता था उसके सामने इतयाद-हृदय कर बाते करनी पूरी थी। जिसे देख का संपूर्ण उसे संपूर्ण को शीतल स्वभाव के स्माग लगाता था उसके वाहत होकर उसे ज्ञानी पूणा, ज्ञानी मर्यदना होती थी, उसे कौन जान सकता है। ²

बाहर उसका कारण यही था कि - "आँख तक रैसा ही एक बालमी उसका प्रक्ष मैं निकलकी थी जिसके सामने वह पिर सुमाकर, देख दुराकर निकलती थी। बब उदी ध्वस्त का एक बालमी उसका पात है।" ³ शारीरिक समकृता भी मानविक प्रेयण की गैरहासिरी मैं समाव नहीं है।

निम्नलीला तौताराम के समझ के प्रति वस्त्र लेह-नाय रखती है।

उसका बदल पप मन उक्ती के लेहना-वस्त्र हाना वाहता है लेकिन पात की शैकना हुई निम्नलीला और मेहराब के संबंध को नेतिक सम्बन्ध है और तौताराम-मेहराब को ही बप्पा प्रतिवंदी समकृता लगाता है। बही वाहत है मेहराब की दृष्टि ही जाती है। बालाकेन निम्नलीला ज्ञानी होती है कि - "कार उसके (मेहराब) मन मे पाप होता तो मैं उसके लिए श्रद्धा कर सकती थी।" ⁴ लेकिन लेह की

1 - वही : पृष्ठ - 61
2 - वही : पृष्ठ - 97
3 - वही : पृष्ठ - 59
4 - वही : पृष्ठ - 139
बादश हुसैन ने उसके पत्र में विश्वास नहीं उपकर दिया है।

'शेखाबुद्दन' की सुमान पर उसके पत्र ने परसुराम-समक्ष का भारीप
लगाया था, लेकिन निम्नलिखित पत्र तौतार रंग का भारीप पुंज है व्याूँविश्वास का है,
यह बनेगा युवा वर्ष का नास्ति है।

प्रेमवंद यहाँ बताते हैं कि कविता विवाह-विद्वान वहूँ में देश की
कुमान हैं-के कारण नारी का जानवर उन असंगत एवं अनिवार्य पारामर्शीय का
विश्वास नहीं पृथ्वी है जो वास्तव में उसकी दैविक एवं मानविक बस्ती के
प्रति दोषी स्वरूप उपकर है।

'निम्नलिखित' में प्रेमवंद ने कविता विवाह के कारण एक झाड़ौ-पीते, शान्त
पर-परिवार को उज्ज्वल दिखाया है। विवाह के बाद तौतार रंग की स्थिति
सामान्यतः और वास्तव हो जाती है। उसका बनना; धेराना, पीरामण फ्रेंडें
के बायान का उपलब्ध कमान की गतिविधियों के प्रति विद्वान की निरोध रन गया है।
तीन मे है दो बैटी की मूल्य हो जाती है, तीसरा पर हे मिल जाता है। तौतार
रंग उसे बौझे निकल जाते हैं। निम्नलिखित मे एक वचन छाड़कर दुनिया छोड़ देती
है। आप मेरी रचना की अत्य असमान तरह फायदा न करें। तौतार रंग न
कर। वचन की अपनी गाँठ में छोड़ देती है। तौतार रंग न हो जाती है। आप बौझी-
बौझी पर हे लेखक ने कहा की बौझी के कुल में विवाह कर दिखाया। ये तो इसके लिये बसी जीवन में कुछ न कर एकी
कैथल बन्ने दे न पर की बात निकली है। यहूदी कारी राहसिया, यहूदी विश्वास देश
मार खालिस्तान, पर कुपात्र के गले न माहिेगा लाती है व्यापक विवाह है। 1
उसकी असामान्य मौत में कुपात्र के गले गयाेने के ही कारण होती है।

निम्नलिखित की यथाली पुष्पा 'शेखाबुद्दन' के भारी की तरह विद्वान पर

1 - व mere :  207
2 - व mere :  205
है। वह अपने पति - जो मुख्यमंत्री ही है - की सुलभ है क्योंकि वो राज्य के लिए कार्य करता है। श्रीमती कृष्णा अपने माता की शादी निमित्त की बनने के कारण है। सुलभ को निमित्त के लिए अधिक कर्म है और पति व्यापार ज्ञात्व-ब्यांत्र कर लेने पर की सार्थकता भंग कर देते हैं क्योंकि ऐसे संभावना है। वो देखते की बुरा नहीं समझती। 1 उसके अर्थ बताता है जो अपने पति है यह कहने का सार्थक बुटा है क्या - "तो ऐसी रचना" उर्दु होगी, जो मदन की जूतियां बना करती है। शोकमिलास शर्मा के बयान में- "कल्याणी और सुलभ शास्त्री नारियल विनाशक और नाटकों की उन तमाम पतियां हैं मिलते हैं जो व्यापारी पति के चरण के बाहुओं के बाहुओं तर कर देते हैं, और उनके अन्याय का प्रतिकार करने की बात की नहीं बोलती।" 2

"निमित्त हुआ तत्त्वकी लाभीय ( नारीलों का लक्षित आदि ) के बावजूद अपनी समाज के सामाजिक योग्यता की उम्मीद की पहल है। हालांकि इस योग्यता में विद्वान नहीं समर्पण की अवस्था है फिर भी इसकी लाभीय की उम्मीद की उंगर बनाने में इस उपन्यास का स्थान कन्यक किया है।

रूपम गुप्ति :-

---

"रूपम" एक विशाल क्षेत्र-पाट वाला उपन्यास है। यह उपन्यास 1930 के जर्मनेल के पहले लिखा गया है। लब-दक्ष गांधी के भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के अनुष्ठान के रूप में जनमानस में प्रतिष्ठित हो चुके थे। देश की बहुती जनता गांधीवादी नीतियां को अंगीकार कर चुकी थी। उपन्यास के लिखे जाते समय जर्मनेल की गति मद्दत हो गयी थी। यह प्रक्ष्ण (रूपम) शुरू होने के बाद महसूल पहले ही जर्मनेल के शब्द था और गांधी की है: बरस के लिए केल।

1 - वरी : पृष्ठ - 205
2 - डॉ.रामाकिलास शर्मा : पुस्तक और उनका युग : पृष्ठ - 60
ने ढाल दिये गये थे। फिर कर्म होते-होते गाँवी की होड़ दिखे गये थे वही ( अपनी काठन बीमारी के कारण ) लेकिन शाहंसह इतनी बढ़ी का बललली । बादलन ठहर पड़ा रहा। पसी का दौर चल रहा था।**

1. इसे कृपया वॉल्स के मीठे ही गाँवीवादी नीतियों के बिना ही भावात्मक उठ रही थी।

2. कहीं-कहीं उन्होंने गाँवीवादी व्यवहार रिक आदर्श पर मानवता की दैनिक ग्रामीण कार्यवाही बाहरें के किनारे प्रसूत किया। कहीं-कहीं उन्होंने गाँवीवादी व्यवहार रिक आदर्श पर मानवता की दैनिक ग्रामीण कार्यवाही बाहरें के किनारे प्रसूत किया।

3. कहीं-कहीं उन्होंने गाँवीवादी व्यवहार रिक आदर्श पर मानवता की दैनिक ग्रामीण कार्यवाही बाहरें के किनारे प्रसूत किया।

**रंगमुख** का मूल कल्प भारतीय कुण्ड-सम्मान पर अलग अलग सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के आकारण वो ग्रामीण-सामाजिक सम्बन्धों में कुल भारतीय सम्पत्ति के

ुरुवारू की पुरातता जमीन पर ज्ञानेवस्त ठिकेट का कार्य का बाहर भारत है।

- **कृपया कल्पना का दिखाया: पुष्टि-307**
- **रामबलास्याम: प्रेसेंट वीर उनके गुण: पुष्टि-84**
फायदा भी बड़ा होगा। लेकिन यह यह रौंक बड़ी, यहाँ लाजी-शराब का भी तो पर्चार बढ़ जायगा, क्योंकि चीत तो बांटा का नाम कैसे, पराक्रोध बालाकृषि कों देखिए, दिनांक बायस होगा। दिसात के दिक्षा नला वाला काम बुझकर मूर्ति के लाख वे दौड़े, यहाँ दूरी-दूरी बाते दौड़े वाले और वफे दूरी बांटना जबसे गँवा मे फैलाकर। दिसात की लड़ाकियों बुझे मूर्ति करने वाली वाली यहाँ कैसे के लोन मे अफाद बायस विकास हो। यही रौंक सहरी नहीं है। यही रौंक यहाँ हो जायगा। 1

कैषायीकरण के सम्बन्ध मे प्रेमचंद के विचार गर्विण्वादी है। और 'रूगमूर्स' का 'सूरदास गँवाली की ख्याति प्रतिफल है, कला वाले उनका बड़ा साहित्यिक दर्दकरण है। वह गँवाली की के विचारी और उनके वर्णिताध्यक्ष ग्यानार्थ का स्वीकृत्ति प्रतिनिधि है।' 2 गँवाली की की तरह सूरदास सार्वजनिक सम्पत्ति का फ़ख़ार है। लेकिन जौनपुरीक सम्पत्ति तब तक एक ऐतिहासिक जावस्थकर बन चुकी थी, जो सूरदास के खाता-विलादन के बाज़ूल करखाने की स्थापना का रूप में निर्णय होता है। ज्ञान देने का बात है कि ऐसा विज्ञ के पीछे एक दुर्भ चांदूक्रं है। जिसमें उद्घोषित, वाक्यारोग और धार्मिक वाद शामिल है। ज्ञान केवल की सूरदास की जगत पर नुकसान कयास दिलाने वे कार्य वर राजा नहीं किए मिल। मनुष्य करते है। इससे बाल यह था कि उपरोक्त की स्थापना के वाक्यारोग-वादान्त को नुकसान की आवश्यकता ही था।

नुकसान किसान का था। लेकिन गुस्तानों मे एकता का अन्तर था। सूरदास बाल की ऐसा हुआ था कि इसमें नुकसान है। दिसात के विचार के काम उबाल जाता है, तो फँसे कते है, 

लेटिफ्रियों को मिलाकर नहीं कैसे, ताप्त मे फँसे है, गँवाली-गाँव, मार- 

पीट करते हैं। कोई विचार की नहीं भावना तुम भागे मे नियुक्त हो, हम

1 - प्रेमचंद : रूगमूर्ति : पृष्ठ - 88
2 - रामदीन गुस्तान : प्रेमचंद और गर्विण्वाद : पृष्ठ - 191-92
बनाजी है। वह ज्ञान की परंपरा है। ¹ वास्तव में सूरदास ने बताये इस जीवन चारित्र में भारत की मानवी स्वतंत्रता का बैरेल दे दिया या फिर - "फिर कैसे, जरा दय है तो है को।" ²

सूरदास एक निर्धार, बल और परीक्षारूपी व्यक्ति है। वह मान-अभाव के प्रति निराशा है। वह बीत-बाहर की बिनता के बगैर वर्तमान की लड़ाई में कठिन है। गाँव में उसे सुप्रभात हो लगाकर बदनाम पिया जाता है। फूटे मुकदमे में उसे केन्द्र छोड़ता है। कुछ दोगुने उसे जीते देने की संधार देते हैं। गाँव का कोई बादशाह उसका साथ नहीं देता। रेजिन गलत तिक्कों ने जीने किन जाने पर भी वह दार नहीं मानता। फूटे मुकदमे में लागा जाते पर वह पििया सूरदास ने कहा है कि एक दादा बाहर फूटे नींद में कोई सो तालब बार वाग लगा दे तो? इसके उत्तर में सूरदास कहता है कि सम तो लाल बार बनात्मक सूरदास हिंदुस्तान के उन किस्म के हैं जिसी सच्चे की, निर्माण करने की तीव्र बातकूद है। उनकी बनात्मक दूसरी बातों को लाल बार बहस कर वह, नहीं निर्माण के लिए के फिर कार चाहिए, तैयार हो जाते है। ³

"रूपमुर्भीं की मुख्य कथा है, जल बिनय और सोफिया की प्रेमकथा है। बिनय की उसकी माँ एक बाहर बैठी और, दैसम्यक स्थानें दे के रही तैयार करके इन्स्प्रेक्स करती है। वह वे बिनय की मुलाकात वीरपाट सिद्ध नाम के बालकवानी होती है। राजस्वात्तु के राजा फ्रेड्रिक के मिंड्स, बूर बूर और बलवानें है। वीरपाट सिद्ध का बालकवानी नवी कल्याचारपूर्ण परिवेश की प्रतिफ़्ल पत्तर है। वह एक फूटे मुकदमे में हाथंकर डाकू हो गया है लेकिन गरीबों में लौकिक है। दूसरी और सोफिया बिनय के सेवा-बादशाह को उद्धवाई। ⁴"
देने के लिए कार्य वे प्रम का स्थान रखकर राजस्थान पुल जाती है, और विनय की सशक्तता करता बाहरी है, हेविन विनय की दवी पुरुष सामन्ती प्रभावित उसे क्षानं बढ़ देती है। वह यहाँ के कृषि कार्यार्थियों और राजाओं के मिलकर प्रजा पर अत्याचार करते लाता है। प्रजा उनके शरण करती है। केवल वह सूरजस्वय के गांव आकर अपनी स्वतंत्रता दिखाने के लिए वात-देशों कर लेता है।

विनय और सौरिया के प्रम की परिलक्षण वे प्रभुदंड ने प्रभुपालत राजस्थान का दौरान का प्रयत्न किया है। विनय किसी बुद्धिक के साथ परिचार के हैं। वन्ना की पीढ़ी-पिक्सेन सामन्त परिचार के हैं। वन्ने की एक दूरदर्शी को पाने के लिए अनेक मुदीवी फोड़ते हैं, लघु चार लाते हैं, हेविन यहाँ के उनके मिलने प्रभुदंड का उपकरण बाहर बाहर है। वे विवाह के अलावा शारीरिक सम्पर्क को निषिद्ध मानते हैं, और विवाह के लिए रानी चमकी का मुह जोड़ते हैं। रानी की तारी स्वतंत्रता केंद्र जब उन्हीं सौरिया में किसी-किसी आकर्षण के प्रति दिशावांत का जाता है। "यह प्रकार सौरिया वह दूरदर्शी प्रभुदंड के मिलने के लिए जो जीन-जागरण के कुछ के मिला है, विपर्यत्तियों का लड़ रहे हैं, वह स्वयं व्यस्त है, क्योंकि वे जिनके विरुद्ध लड़ रहे हैं, वे सामाजिक मान्यताओं की हैं। और जूनकि केवल उन्हीं सामाजिक मान्यताओं की स्वीकृति है, ही कोई वैदिक तारी केंद्र है। हालाँकि एक तर है उन मान्यताओं के लिए रानी कोई मानी नहीं रखता।"  

रानी यहाँ का वित्ताधीन जनवाद सामन्ती स्तिति की रहता है। वे पूर्वी वर्ष के विरुद्ध आवश्यक की मदद करते हैं। राजा पुरात सिंह का विलासी स्वामी वंश के बना रहता है। रानी जानवी समाजवादी के वादों की विरक्ति के बावजूद के ही ही विनय वादी सामन्ती विनायक है जी संवाहित होती है।

गरारका: "श्रीमरीतिवाड़ी वौषषीकारण के दुर्विरोधियों को -
केवल फिते बाला उपन्यास है। जिसके वह जाहिर होता है कि वौषषीकारण
1 - वैदिक विकास में सिः: वानन्त सिंह की विनायक की परिलक्षण।
का या क तप :-

'कायाकल्प' 1928 की क़़़ियत है। यह उपन्यास जालोचरों में सार्थिक विदवादक्रम रहा है। 'कायाकल्प' की क़़ायम के मुख्यः तीन बाग़ हैं। राजा-प्रेम स्वभाव, हिंदू-मुस्लिम समया और राकेश बाल्य पुर। 'रागुरुपी' में प्रेमवंद ने जहाँ दैवी राज़ाक़ी की क़ुँया और वज्ह़ाचार का निरीक्षण इत्यादि था वहीं कायाकल्प में वे ही आधिक जतनी ही देखकर चित्रित करते हैं। इस उपन्यास में प्रेमवंद ने हिंदू-मुस्लिम समया को 'वैवासद' के बाद अधिक व्यापक रूप में उठाते हैं और संस्था की जड़ में द्विधाशील लक्ष्याएँ की तरफ छेड़ते करते हैं। उपन्यास में बत्तिसामान्य व्यक्तियों का भी प्रभाव है। रानी देवाभूषण और राजा प्रेम के पुजित्यों के प्रेम में प्रेमवंद ने शायद अपने प्रेम व्ययनों के बादशाही व्यक्ति की प्रतीकात्मक व्याप्त पूरे बाहर है। हेतु यह कहा-भाग उपन्यास का खंड बनाने का हिस्सा है।

सभी माधव ने 'कायाकल्प' की विदवादक्रम भी बनाया है। सार्थिक व्यापार के चित्रण की अवधारणा में यह अल्पमात्र व्यक्ति अद्वैत लगती है जो निःश्रेणी उपन्यास की शुक्लता में बाध्य बनती है।

प्रेमवंद ने परतु पारत के राज़ाक़ी, कीर्तिगारों, वाजीराधारों और सामन्तों को परिस्थितियों के द्वारा विद्याया के शोभना के प्रति विवेक दिखाया है। उनके बाद उपन्यासों में भी ही लोग स्वीकारते हैं कि कपिलों को हारिया-नवरात्रा और मौज़-उल्लूम के स्वागत के लिए तथा व्यक्तिगत सान-शंकि की रचना के लिए उन्हें प्रातिकृत परिस्थितियों में भी रिखाया पर जब करना ही पूरा है।
लेकिन उनकी हस्त नैतिक स्वीकारोत्ति की शीर्षण का एक विन्दु बलाता ही क्या जा सकता है।

विशाल बीर के राज्याधिकार का बाध्यता सम्पन्न कराने के लिए प्र्यात है, बलात राज भी चुका जाते हैं। मार-पीट, दुख्द-केादक्षि, और-जब्दस्ति वादि दूर साधनों का यमोग प्रकट किया जाता है। बलात ली जाती है। पीटी के 
केले वाले पीटी को पाप न पहुँचाने पर कमार्दे पर अटट बरसाये जाते हैं।
बन एक दुख क्षत्र बोलता है कि "हम लोग तो बिना लावे बाहर दिन दिन दिवा दिन है। वाँ दिवा है। पीटों का बिना लावे प्रत दिन धन है पाप दे रहे हैं, पीटों का बिना बाहर एक ज्यों न दौड़े। क्या हम पीटों के भी गए दुख रहे हैं?" 1 तब उसे पीट वे पीटा जाता है - "नैति देश, मार्च फट गया, जूत निकल गया।" 2 इतना ही नहीं पारे मक्खुर एक होकर बंदूकवारियाँ में भी लेबर करते हैं, उन्हें दींदे देखें देते हैं लेकिन बुन्देह उन्हें 
बीच में ही रोक देता है। जालियों में कंप्टी केंद्रों पे वली गोलियों ने वली 
लंघन में मक्खुर पारे जाते हैं। "ज्वाट समकाल मक्खुर कंप्टों की बंदूकेह हीनकर उन्हें भी प्यार देते पार बुन्देह ने उन्हें पीटी हटाने के लिए न ला लीता। गांव के वे बुन- 
मक्खुर बीचट के बाबुमन है। वे काले-फरेड रंगी बंदूकवारियाँ है नहीं हैं। वे 
कंप्टी और उनके दंभालों के निशावाल बाहर करते पार उन्हें बुन्देह जो लोगों की 
काबिलक फटा घर जाता। इतना प्यार देने मे देर लाती है, लेकिन प्यार 
लग बदर जाता है। 3

"काबिलक ये ताज्जुलक हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर भी प्रकाश 
हरा गया है। थां क्र राजनीति के नियमन मे वा जाता है तब उसके बाद 
तत्काल गायब हो जाते है और काल्चक हलचल के लिए घमन्त्या का यमोग 
कृतिराजनीति के लिए वे होते हुए करते हैं। "था हे ज्वाट ये देश प्यार करू 
वाली वस्तु संख्या मे नहीं।" 4 है। बागरो मे "बुन-बुना सी वात पर दोनों

---

1 - प्रस्वर : काबिलक : पुष्प - 111
2 - , , , पुष्प - 111
3 - श्रीश्रीपदाधी शरीर : प्रस्वर और उनका युग : पुष्प - 75
4 - प्रस्वर : काबिलक : पुष्प - 29
दलों के विरासत पर जमा हो जाते तो दो-बार के कंग-पंग हो जाते। कैसी 
बनिये ने छैली पार दो जूते और मुसलमानों ने उसकी जुतान पर राखा जा सका। 
कौन भी फिर जुतान के पार हो जा जाए। अंततः तो मीठे मीठे फूल फिरा और मुहल्ले में फैज़ालों 
हो गए। एक मुहल्ले में मौजूदे ने राहीम का कलकार फूल फिरा और पांव बात 
पर मुहल्ले पर के हिंदूओं के पर फूल जाते। दूसरे मुहल्ले में दो कूतूरी की बात 
पर तब्दील आयी जीभ पाया हुआ क्योंकि एक होशन का कुत्ता था, वृश्च 
की हाथ का। निज के राजस्वाधीन दामाद वायुधर्म के दोबारे में बीच लाये जाते 
थे दोनों ही गल मजबूत के नमक के वृक्ष थे।

1 वायुधर्म का पराक्षण ने आदर्श को हजारा होता बना दिया है कि स्वाजा साहब की बेटी तुल्य अवस्था 
है उनकी ही बेटा बलात्कार करता वाल्तक है। वैसी यह मजबूत नस्ल मजबूत 
की रक्त के लिए नहीं बल्कि वायुधर्मवादी शक्तियों की दक्षतावाली है परम 
उल्लेख्य है। भैया और उनके पिताओं के व्यास फूल कटाव में राज करते हैं 
को रायधर्मवाद का कलई जाया फहसा गया है। नहीं तो वह बड़ी मालूम है कि 
क्यों मुसलमानों के लिए हुयमां को कोई दृढ़वार ठीक नहीं है, किन्तु हिंदूओं के 
लिए दोनों ही देश में रहें और दोनों देश में बसें।

2 वैसी यह को लड़ाये 
वर वायुधर्मवाद के पर उल्लेखना का वैवेद ने स्वाजा साहब को स्वीकारों विश्व में 
यह संकेत शामिल है। यहाँ भी उत्तराधिकार का 
उल्लेख करता है किन्तु तालाब का उत्तर का साबी था, फिरम 
यह पुकारी हुई ज्यादा, वहाँ यूदा जाने वह कोई तालाब की जो यह 
दोनों को बरसात रखती थी। वह बोला था कि वैवेद करता था, पर व्यवहार 
परवर के हियाफ कोई दौड़ी तालाब हमको लड़ाती रखती थी।

3 यह दैवी तालाब 
और कोई नहीं, वायुधर्मवादी अंग्रेजों की है और स्वाजा साहब की जुतान, मारत 
के प्रत्येक हिन्दू और मुसलमान की हल्तखाड़ी बनान कामना है।

दैविक विश्व में दौरे करने बनाने की योजना है प्रत्येक दौरे के

1 - वहीं । पुष्प - 205
2 - प्रभावः कायाकल्प : पुष्प - 208
3 - , , पुष्प - 209
बारिक रूप की ख्याति प्राप्त बनाना वालें हैं। बान्ना और विवाह को वे कृपया और दूर करकर बताते हैं लेकिन देवालिस्ठा की माँग हलाल रातिवााक के भीतर खाराप का स्वरूप है। नेत्र-रामविवाह शरीर के कुंजार तो - "देशा लगता है वह उन्हें यूनियन का पात्र क्षयकर यह जन्म का पति भी बना देती है।" 1 अबले देवालिस्ठा 'प्रेमाक्षा' के गायकी का ही विवाह है। जबकि राजा विवाह विशवाल दिन्ह की ती-नार पत्नी है लेकिन चतुर नहीं है। उनके बीच में घटनती माँग दर्शित की भालक स्वरूप है। मनोरमा के रूप में प्रेमवेद ने "रंगमुरुम" की सौफ़ाया के वाचर को विवाहित किया है जो प्रेम की अभ्यास में बदलकर चक्रवर्त के कड़योग की बहारियत बनने के लिए राजा विवाह विशवाल दिन्ह से मनोरमा विवाह का प्रेमवेद के बादस्था का बौद्ध दृष्टि है।

राजा विवाह विशवाल दिन्ह और चक्रवर्त का चारिक विपक्ष उपन्यास के शीर्षक को बाध्य धारणकर देता है। प्रेमवेद 5 तेरफ़ दर को जाने वाले विवाह विशवाल दिन्ह राज्यासिद्धक के रौज़ से ही प्रेम को बना बिजली का वूल समान लाते हैं वहीं रियासती प्राकृत बैंडकर चक्रवर्त की राज्यकर दृश्यित की बाधा उठाती है। उसकी दृष्टि प्राचीनाकाट ने समर्पित वाही बिचीलिफ़िया की प्रकृति दुरुस्त है जी दीखती है, जो विद्यालय पात्र की रूप में उपर बाटी है। यहां चक्रवर्त का वरिष्ठ प्रेमाक्षा के विनय हे बहुत मेल लाता है। का गाव के फिसानों ने बनाने को महाराज (विवाह दिन्ह) का वादपी बलाकर बुरूज़ मोटर देल्कर हे बनाने को कहता है, और थोक-पांडे विखान हनकार कर देते हैं, तब वह गाँवा दिन्ह नामक विखान की रैथी ठाकुर नारायण है कि घोड़े की दिनी बाद वह मर जाता है। चक्रवर्त के खायाकल्प का प्रेम बुद्ध मिशन बनाना है कि - "सेवा, बैल की बात दूसरी की। तब द्वारित हैं तब राजा ठाकुर तो नहीं है। राज्याकर व्यावाश्य रहने तै जाने।" 3 विखानस्थित वीर चक्रवर्त का चारिक्ष विपक्ष वालक स्वरूपिक नहीं बाध्य भवानिक विवाह है, विखान और रैबंद के प्राकृत में वायारीन -

1 आरामविवाह शरीर : नृसिंह और उनका युग : पुष्प - 74
2 - नृसिंह : खायाकल्प : पुष्प - 117
3 - , , , : पुष्प - 278
प्रज्ञाती का है कायाकल्प है।

लौगी एक अतीत लघु है। वह वैषेष विद्वानों के प्रति विचार में एक व्यावसायिक नाती की मूर्तिम नीची है। रूपल हौड़े, जो वह अपनी कास्मिकता में एक गुहाटी गुहारणी है। विद्वान हौड़े भी वह अपनी स्वभाव और कास्मिकता में एक अपराध का माता है।

' कायाकल्प ' में प्रस्तुत को 'प्रमाण ' और 'गूढ़कर ' की अपेक्षा शिल्प-गत एक लहर का भीत है। यह प्रश्न-विचार के नक्शी की चित्त सींचने में काल्पनिक निलाम का व्यक्त है। राजा-राजा सम्बन्धों की, हिंदू-मुस्लिम दृष्टि की और रायणाओं की विलासक बारीकियों के प्रस्तुत ने इन उपन्यासों में एक अपराध श्रृंखला पूर्ण परिचित करवाया है।

-0-0-0-

3 - पूर्वती उपन्यास :

प्रस्तुत वपराती उपन्यासों में अपनी यथार्थिन्य मुख है। पारस्काराक व्यतीत अर्थ उनकी तूफान-वेषालिक हुए। एक महान उपन्यास में अपने अभियोजन तरीके की कला में अपने विकास भरपूर है। इन उपन्यासों में प्रस्तुत ने उपन्यासों के भूमिकाओं हर निकालने है अपने को बचाया है, एवं प्रस्तुतिभूमि लूटियां के प्रति अपनी प्रतिकूल व्यक्ति की है।

ग ब न :-

'गन' सन् 1930-31 के दौरान पास निभाई। वे रामार्ग पराग वार्षिक कादिविश्व वालोंक "गनस' को सन् 1904 के बास-पास हरिद्वार
प्रेम देव प्रकाशित "कृष्ण" नामक उपन्यास का ही परवर्तित-संपूर्णता वस्तुतः पाया है। 1 किन्तु हमें विवाद है, क्योंकि इसके पीछे किसी ठीक प्रभाव का बाक्य नहीं है। सदिव गोपाल के अनुसार - "र्गबने एक प्रकाश है उनका पौराणिक उपन्यास था। एक प्रकाश है इसमें स्वतंत्र दर्शन है, कि हमें दिशाओं के आगुण्णयों के प्रति मोह पर प्रारंभ किया गया था। इसी समय की लेखन प्रेमबंध ने "नवांकरोय" के नाम में "किसने" लिखा था। उसी "किसने" उपन्यास का सातवां वर्ष नया रूप था। परन्तु यह रूप बना नया था कि हमें पौराणिक ही समझा बाध्य है। हमें बन्य सामाजिक समस्याओं पर भी राजस्वी चाली गया है, उसे हिस्ट्रियक राज्यवादियों पर मतवाद, न्यायवादियों की गर-समनस्कारी और राष्ट्रीय आरामदा कार्यालय, उत्तरदा। 2 र्गबने का प्रकाश 1881 के बारे में सरस्वती प्रेम देव हुआ था। 3

र्गबने के लिखने में प्रेमबंध के दो उद्देश्य निहित है। एक बार उन्होंने प्रेमबंध वर्ग का यथार्थ-जीवन विचार करना चाहते हैं, और दूसरी बार पुरुष द्वारा करने वाला कार्य का फायदा करने उसकी व्याख्या के सही परिचित करना चाहते हैं। हम नाटक गोपा रूपसे कथाकार द्वारा उपन्यास था। 4 "निर्देश" के बाद इस उपन्यास में प्रेमबंध व्याख्याता की विशेषता में एक कदम बढ़ता जाने लगांकित है। हम उपन्यास में समस्याओं एवं पाठकों के विषय में प्रेमबंध ने आदर्शवाद का वास्तविक बार नहीं फिरा है। बल्कि उन्होंने तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थत्व विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसीलिए हम इस उपन्यास में प्रेमबंध के वादशैल-यथार्थवाद की लुप्तस्थिति सा पाते हैं।

र्गबने का पूर्वोक्त पुस्तिकार वर्ग के एक परिचार की कहा है।

द्वारानाथ के बैंक समान की शादी की दो दो चौथी लीलावाल की बैंक जाताया है छैती है।

| 1 | वैसा राम रक्ष पिनाठार | क्लास्टर प्रेमबंध | पुस्तक | 175 |
| 2 | मदन गोपाल | कलम का मक्खौली | पुस्तक | 182 |
| 3 | "" | "" | पुस्तक | 210 |
| 4 | राजेश्वररूपम | प्रेमबंध एक वाढवन | पुस्तक | 200 |
मुझे दीनदयाल बेटी की शादी मे फिल निकलकर बच करते है। उनका वैतन तो कुल पाँच रुपए था, लेकिन उम्मीद के लिए व्यापक रूपसे वैतन था। देखिए "वधान अभारी मे नानक थे और फ़साल रुपए वैतन पाते थे। ....... इस जमाने मे 50) की सुनित ही बना। पाँच बाबाकियों का पालन बड़ी मुश्किल है लोटा था।" 1 इहीलिए बेड़े को शादी उनके लिए एक समस्या बन जाती है।

सामाजिक-रुपयार का निर्णय करने के लिए वे वररूप से उपार बेलकर बडू के लिए गनने के जाते है। देखिए बाद मे वररूप का बडू ने चुका सकने के कारण वे रामनाथ दे बडू के गनने छोटी कराकर वररूप को लौटा देते है।

"गनन" का नामकरण रामनाथ बूली मे नैवेद्य करता है। वह मन्द्वर्गिय हनुमुख का त्र्वतिन्धित-पात्र है। रामनाथ बपसी घरिराव की वार्षिक स्थिति का बपसी पतली दे बडू-चट्टार बलता है। वह बपसी मित्रों की पढ़ी और बने पन्हन की बपसी जालम्ब-ज्ञाता की लुप्ति करता है। एक दिन जालपा की बपसी रत्न रामनाथ की बांट बरोदने के लिए रुपए देती है।

वररूप वह रुपए रामनाथ के खुराने हुए में काट देता है, जालपा घर मे रखे हुए बूली के रुपए रत्न को दे देती है। रामनाथ इस अवस्था को जालपा मे दिखाता है और गनन का बेद चुका जाने पर फिर जाने के पथ के पर बड़कर भाग जाता है।

उपन्यास की नातिका जालपा का पालन-पौषण "बापूज्ञान-पाण्डितै सैंसारे मे हुआ था। बच्चे मे वह गनन मे ही नैवेद्य थी, और जब बाप बड़ी हुई तो बड़ी-सौंडियों मे बैठकर गननों की बातें सुनने लगी।

मातिलों के उन छात्रों से सैंसार मे इसके खिलाफ बाप की न थी। "

इस प्रकार बापूज्ञान-मै उसके वैतन के बुढ़ गया था: - "जालपा को गननों"

1 - व्रेमबद: गनन: पृष्ठ - 12
2 - ,, ,, ,, पृष्ठ - 31
हे जिना दर्श या, उतना कहाँचत वैशार की दिली कसू थे न था। ¹
बहुत बात शुरु नहीं बननार न बाहर न पर वह बहुत दुखी होती है।
वैसे जब शुरु रहते हैं उसके गले चौंदी चले जाते हैं तब - "वह रसा वे कैल
होती है न रखी थी, वह कहीं कुहू फूलका लो दो-चार जली-कटी हुना देती। ²
हैकन जब रमानाथ का जालया का शीरोङ्गू लाकर राखा देता है, तब उससे पति के
प्रति कैल-प्रांत नागृत हो जाता है - "उस सिन्हा जा जालया के पति-स्त्रेल में कैल-
पान का उदय हुआ। वह स्नान कर जाता, तो उसे बफती धौती बुकी हुईं
मिलती। वह पर साजन लौलौल ने रखा हुआ पाता। कब दफ्तर जाने
लगता, जालया उसके कपड़े लाकर सापने रख देती। पहले पान खाए न पर मिलते
थे, कब जबर्दस्ती किलाने जाते हैं। जालया उसका राख देता करती। ³

पहर जालया का चर्चा महज मन्यसर्गर्गीय नाय्र की आमूर्मणा-
प्रकट ही तब दीयित नहीं है। उसके जालम-मम्मान का भाव और नैतिक ग्राहक
भी है। वह बफती मात्र व्यरत में गया लावल वापस गाए देती है। वह
कहती है - "मेरे किशोर का दान न खुप्पी, वहाँ वह माता ही बन्ने न हो। ⁴
वह पति को गहने के लिए कर्क लेने वे पान करती है। कहती है - "नहीं, मेरे
लिए कर्क लेने की बजरंग नहीं। में कैंडपा नहीं हूँ कि मुझे नाच-संगीतकर बनना
रास्ता हूँ। मुझे तुम्हारे साथ जीना और मरना है। कहां मुनिके बारी उग
बेगानों के रहता पहले, तौली में कर्क लेने को न खुप्पी। ⁵ इतने उसका
अत्यन्त लामूर्मण-प्रेम देखकर रमानाथ का कर्न लेने के लिए तैयार होना दी
स्वाभाविक है। तैयार रमानाथ के घर वे मानने के साथ ही जालया का आमूर्मण-
प्रेम दहला हो जाता है, और उसे अपने पति सवे पर की विया त्या का फल बना
जाता है। जालया वनस प्रकट-लामुर्मण बचकर गन्य किये गए लपस की परमाश

1 - प्रस्ताव : गन्य : पुष्प = 30
2 - " , " , पुष्प = 31
3 - " , " , पुष्प = 60
4 - " , " , पुष्प = 43
5 - " , " , पुष्प = 48
कहती है और बसने देवर को साथ लेकर रसनाथक को होकर निकल पूछती है।

"पत्र" के मुख्य की पतनारी कलशाबाद में पत्र है, जबकि उत्तरार्द्ध की पतनारी का चौथ कहता है। रसनाथक घर से तम्बका कुकरते में देशीदोन स्तीर के पर रहने लगता है। एक दिन उसे पुलिस फंसे लेती है और पुलिस के दबाव एवं प्रशिक्षण में आकर वह अन्तरिक्षकारियों के दिशा मुबारक के लिए तैयार होता है। जालया रसनाथक को बौजही दुख कहता पुकारता है। उसे बसने पत्र के वार्षिक पत्र का बहुत चीत लेता है। वह रसनाथक को समझता है: "पत्र" का रसनाथक कहता है - "रसनाथक दुख मुफ्ती थे कि नैसर्गिक आवाज ने मुफ्ती लातार कर दिया। मुफ्ती का ठीक-ठाँच तो नहीं है। ये पुलिस है राह की मालिक है। मुफ्ती में की मृत्यु होने पर बहुत है। पुलिस में ऐसी फंसे की बादशा पर बहुत है, कहां मुफ्ती उत्तरार्द्ध पर बढ़ता रहता है, जहां पुकार के राह मुफ्ती नहीं है।" 1 रसनाथक के इस शब्द में मध्यवर्ती कलशाबाद की मुश्किल का पूरा उपवनत है। रसनाथक मध्यवर्ती, दुख-मान-सिकता की यथार्थता के मुलाकात ही मुबारक बनता है।

"उपवनत के चाराध्य के ही रसनाथक को पत्र ने जिन वार्षिक गुणों है काृपृणित किया है, उसे ही रसनाथक का विकास एवं मुबारक के रूप में ही ली जाता था।" 2 जालया बसने पत्र की नीचता और क्षयता के कारण उसके प्रति कहना पुराना से पर उठती है। कोर्ट में रसनाथक के मृत्यु बयान दिया जा रहा वह झूठी है। जब मुफ्ती के राह में राजार रहा, राजार। तुम हानि नीच हो कि उसके प्रति करने के लिए कोई शक्ति नहीं है। तुम हानि नीच हो कि बाज करने है की नम मुफ्ती के तुम्हारे ऊपर नैसर्गिक है। तुम्हें खिसके ने कहा की बाज न पार रहता। इन बादशाहियों की जान तो जाती है: पर तुम्हारे पूरे में तो कालिम न लगती। तुम्हारे हानि पत्र हुआ तुम्हें 3 बाद में जालया

1 - प्रमुख : गबन : पुष्प - 222 - 23
2 - राज्य, कोर्ट: विवेक राजन : प्रमुख के पत्र में संबंधित कोमल
3 - : .., कोर्ट का निवांत - रसनाथक : पुष्प - 145
   प्रमुख : गबन : पुष्प - 239
के तिरस्कार और फटकार के कारण समानाध्र बयान बदलने के लिए राजी हो जाता है।

वह यह उप्योग लिखा जा रहा था, तब देश में आजादी की लड़ाई के लिए जीवन सैयार हो रही थी। फ़्रूटीवादी परिवेश में मजबूर बनने वाला रोडी को फूटी हुई पस्तक रही थी और वर्तमान उन्हें कुहने के लिए तरह-तरह के दाँत-फेंक कर रही थी। सन 1929 में - "मार्बने के महीने में देश-दर मे बैठे-बैठे दामादी पत्रकार बड़े लिखे गये, और नाराज-प्रेम के नाम पर उन पर मुकुटम्यु हुए हो गया। वह एक मजबूर राजनैतिक केस था। दुनिया घर में उसकी चर्चा थी। काफे के नाम का उत्तराधिकृत पत्र, जानवर कह रहे पत्रकारों के सिक्के पुलिक के फ़ूटे केस की हार पानी है। 20 मार्च 1929 के बाद देश मे तलाशिया और लोगों के पर-फड़ हुए गबन शायद बारे मे कुछ का ही लिखा गया था। और बाद के बारे मे ज्यादा रिह्से पर उस केस की हारा हो तो नाराज की बात न होगी।" 1

वह उप्योग का एक महत्वपूर्ण पत्र देश-दर में ग्रेटर लोक है। वह दी माध्यम का ही है , कितना बाबू नहीं जपदी है। पर दु:ख कार के और देश में जानता है - "किस के दान पर बाद लोग रहते है, उस बात पर उसे देयी मारी थी। " 2 उसके के दो बेटे स्वतंत्रता बादल में दिशा हो चुकें है , जिस पर उसे गर्म है। वह फ़ेडराईल नेता का स्वतंत्र जानता है। वह यह भी जानता है कि फ़्रूटीवादी स्वतंत्र नेता के सिक्के कुछ न चौरा। कार दाचार भिला ही गया ली यही ज्यादा स्वतंत्र फ़्रूटी नेता के देखे कुछ न चौरा। बाद बाद के बाद के दाचार भिला ही फ़ेडराईल है। नहीं बाबू-पुलिक माध्यम दुःखी हैं प्रेमित होकर वह एक देशी है। फ़ेडराईल बड़ा है। पूरा है - "खास, बड़ा बातालह, का यह धरारुज का नाम लेते है, तो उसके कौन धरारुज तुलसी के बारे मे बाता है? तुम भी

1 - कुमार शाह : अशोक : कम का सिंहासन : पृष्ठ - 419
2 - अशोक : - गवन : पृष्ठ - 152
बड़ी-बड़ी तल्लू लोगे : तुम मे कृष्णो की तरह बंगले मै रहोगे, पहाड़ी की
वुरा लाना के तक के नाथ बुधगांव मे, जों वाराणसी, तारा बुधगांव मे रहोगे,
बड़ी ढाँचा लोगे, तुम हैं बड़े नाथ बुधगांव मे, तुम हैं बड़े नाथ बुधगांव मे।

1 वाराणसी मे वह ग्रासवंद की
ही मायावद्य खुली है : जो वल्लुगत युगादि की उसके साथ वजन
की जाता रहती थी ।

ध्यान प्रकाश गवन मे ग्रासवंद ने रामायण के रूप मे एक मायावद्य युग की
िका घनिष्ट, गौर लालका, ज्योति प्रस्तुति एवं कायरता बादि वाराणसी
वास्तविक दृष्टि का घनिष्ट विचार लीना है। जब वेदाण्व मे यह ग्रासवंद की
कोशु है बहुत वहीं-“जालपा एक देश-मक्ता नाथी है। रा्स के
स्वास्थ्य वालों के साथ यह वालों के लिए उसके सिद्धियों मे
स्वास्थ्य युग मे है और रा्स के साथ तीव्रस्थापन तीव्र युग
है।”

2 घनिष्ट प्रस्तुति के वारित मे उण्डनीस्य उपलब्ध रूप मे विस्मयिक
परिवर्तन हुआ है : बहुती
“यह वाराणसी वायु वातावरण मे पूरी तरीका है। विस्मय
वायु रामायण की युग थी है। घनिष्ट
घनिष्ट स्वास्थ्य का रहता था और अनुभव है वही वायु
रामायण का रहता था। फिर उसका एकदम रामायण की
निका विश्वास रामायण का विश्वास
है और अनुभव है वही वायु
रामायण का रहता था। फिर उसका एकदम रामायण की
मायावद्य का विश्वास नहीं बना रहता।”

3 फिर वह ग्रासवंद
के यह बादश निर्वाच बालबुद्ध जालपा के रूप मे ग्रासवंद ने मायावद्य की
रामायण का मायावद्य का बादश
वायू का बालबुद्ध जालपा के रूप मे ग्रासवंद ने मायावद्य की
रामायण का मायावद्य का बादश
वायू का बालबुद्ध जालपा के रूप मे ग्रासवंद ने मायावद्य की
रामायण का मायावद्य का बादश

1 - प्रस्तुति गवन : गुश्च - 152
2 - वास्तविक शरीर : प्रस्तुति और उनका युग : गुश्च - 69
3 - गवन रामायण : प्रस्तुति : बीमा, क्ला. और वित्त कुम्ल - 248
कथानी कह जाती। फ्रेम्बेंड ने उसे नारी समस्या का व्यापक भित्ति बनाने के साथ-
साथ इस समस्या की 'क्युंकि' धारित्व में फहरी बार देश की स्वातंत्रता की समस्या
है भी जोड़ दिया है। '3 जो फ्रेम्बेंड की सामाजिक-राजनीतिक अविश्वसनीयता एवं
हैट्स-फ़्रॉन्टल क्रियात्मकता का परिवारक है।

क में मू मिः :-

'क्लॉडा'1932 के बास-पास की रचना है। यह समय साविनय-
वर्ण वांदरियन का था। जार्डनवार्टों की गिरफ्तारियाँ ही रही थीं।
पुलस्क का वल्यूचर करों पर था। देश की सार्थकता जनता सुधार पर रही
थी, लैंडर विकास में बलाल लगाया गया रशा था। फ्रेम्बेंड एक सब्ज
रवनाकार की दृष्टि से यह सब देख रहे हैं। उसी समय उन्होंने 'है' में
'दस्त की शीर्ष' शीर्षक है लिखा - 'क्लॉडा मुली' पर रही है, हमारे विकासाध्यों
को अपने हाथों-पांजे में रहती पर की माने भी वचीकार नहीं। सब-सेवा ज्यों
का त्यों चल रहा है। फ्रेम्बेंड के पास लगाया दैन में कृषि न हो, मगर तरकार बफरा
लगाया बुलूल करते ही छोड़ते, वाहे विकास बिक जाय, वाहे उसकी कमी
बेकाबू हो जाय, उसके बाड़-पढ़ँ, बेड-पढ़ी, बदाज-मूसा सबका सब बिख जाय
..... क्लॉडा के रिख दे को फांटेब्ब मदकर नहीं, बर्कार को नहीं दिली बनवाने
की धृत है, क्लॉडा को रैटिया का ठिकाना नहीं, बांधिजारियों की द्वार-धार
वार पांच-पांच वहार केतन केप्सन टिल्डा वाहिया। '2 यही समय फ्रेम्बेंड
'क्लॉडा' लिख रहे थे, और 'क्लॉडा' में यह लिख रहे थे कि 'फ्रास्टा के
विकास बब बेकर नहीं है। उसकी लुझाई के साथ लगाया जनता बफरा वांगारी
की लुझाई में तारे बढ़ रही है। ......... 'क्लॉडा' में यह सबसे ज्यादा और
कमी की समस्या, लगाया करते की समस्या, कैर-किट्टों और गरीब
शिकारी के लिए कमी की समस्या पर डाले हैं। '3

1 - हैं रामबिलास शर्मा : फ्रेम्बेंड और उनका बुदं : पुस्तक - 73
2 - बुधर राय : फ्रेम्बेंड कल का सिपाही ? पुस्तक - 455
3 - हैं रामबिलास शर्मा : फ्रेम्बेंड और उनका बुदं : पुस्तक - 85
बमराकन्त धनाध्य महाकाव्य समरकन्त का चैता है। वह बचपन वे ही राहस्यान्वितियों को समझता है। घरी समाज-सेवा का कार्य करता है। समरकन्त विधान-जीवन में बाली दोस्त सजीव के साथ गाँवी को धार्मिक-स्थापत्य का उभयता करने जाता है। वहाँ वह देखता है कि गाँवी में धार्मिक प्रभाव देते नहीं है, जिनके वहाँ एक-दो बच्चे के खिलाफ है। एक समाज वीर बनाने की दिशा में जोड़ता है। वहाँ समाज की रचना समाज-सेवा की भारतीय और द्रविड़ शैली है, ताकि उसकी पत्नी और फिर उसकी समाज-सेवा का स्वरूप करते हैं। समरकन्त पर वह मानकर एक गाँव में जाता है और उसे जीवन की रचना करके बदला जाता है। नाव में उसके प्रवर्तकों पर वह आंदोलन में समर्पित होते हैं।

"कर्मफूल" में पुस्तक: दो आंदोलन है: एक गाँव में राजनीति का आंदोलन कीवर्त के खिलाफ और दूसरा शहर का आंदोलन मुक्तिविरुध्क के खिलाफ। गाँव में समरकन्त के नेतृत्व में महान-चंद्री का आंदोलन शौकाई। शहर में एक लोगों के खिलाफ एक गद्दी की है। उसके वीर और मुक्तार उनके के प्रेरणा थे। वह लोग वराबंध कुला महाता था। ठहरावारों में चौथे न कुंड उत्सव होता है। जिस ठहरा की जन्म है, करीब व्यायाम है, करीब समृद्धित है, करीब फूलता है करीब जलविहार है। आंदोलन करने वालों ने दूसरे पर भरत में देनी पहुँची थी।... बच्चों के दोनों का लगातार बड़ा होता था। कि यह उपलब्धि के वराबंध पर न पूर्णता थी: किसी पर यह यात्रा और वीर, मूल-वीर रहकर, वीरों की दृष्टि मात्र के लिए नहीं है। वह सन 29-30 के विशेष व्याप्ति व्यापारिक-वेदों का चौथा था। यह शान्तानुमोदन की अमिताभ का मात्र गया। जब यह तैयार था, तो मात्रविद्या उपलब्ध वेद-वाचक लगाने उसे देता था। लेखिका जब दौर और तीन

1 - आंशिक मानक: क्षमाता: मृणु - 27
2 - क्षमाता: मृणु - 241
की जिन्दा एक में बिके तो सिखान का करे। कहाँ से लगान दे, कहाँ से
दस्तूरिया दे, कहाँ से को बुकाये। विकृत समस्या या कुछी हुई: और यह
dशा कुछसी हालके की न थी। यहाँ प्राण्या, यहाँ देख, यहाँ तक कि यहाँ
क्षोभ में यही मैंनी थी। 1

कृषकम् की उक्क दुःखम् के विकृत क्षमरक्तम् के नेहुल में
लगाय-बंदी का वाचौला बढ़ता है, हालक असफल रहता है। सिखान-बांटोल
की हस बांग की क्षमरक्तम् की गाँवीवाड़ी समस्याता परिक्षा बुका देती है।
वायकायण सिखान क्षतिकारी आलमानैव के व्यवहारिक राष्ट्री का समय
करते हैं कि - वारण हम सब बलवार महत्त्व की का मकान ओर ठाकुरद्वारा
थहर यह ओर जा-तक वह दशमा बिल्लु न होइ दे, अर्थसंूर न होने दे। 2
हालक क्षमरक्तम् बांटोलम् के हस व्यवहारिक मार्ग को बमी फिक्षिले आवर्जी-
वाड़ में यह बलवार कंट धाराहार है कि घर में बांग लगने पर हमारा क्षमता
है? क्या हम बांग को फॉलने हैं तार में की बची-बचाई बोलें पह लाकर उर्मी
बाल है? ऐसे हम पर की जलना नहीं, बनाना चाहते है। हमें
उस पर में रहना है। उसी में जीना है। यह विपत्ति कुछ हमारे ही ऊपर
नहीं पड़ी है। यहाँ देख में यही हालकाल मध्य हुआ है। हमारे नैता हस
प्रकृत को एक करते की वैसता का नहीं है। उन्हीं के साथ यहमें भी विछना है। 3
भारतकृत पहल की सिखानियों के लिए दु:ध्य की फारसाइक करता है। उसके
सामग्री-संस्कार उसे समकायन करते के लिए शाभ करते हैं। वह महत्त्व की
वह वात पर सबसे ही विषय कर लेता है कि उन्होंने कारवास की क्षी
साधक कर दी है कि फिर कारारण से सलील न की जाय, और फिर वे
कारारणों का सत्यता जानना बिल्लु नहीं करते। 4 यह क्षतिकारी
वात्मानी को गिरफ्तार करवाने में सरकार की मदद के लिए भी तैयार हो जाता है। बाद में भूला जी चार बाने की बुद्धि देता है, लेकिन बजाया व्यवस्था के लिए व्यक्तिमत्वों पर चुक की जाती है। लगान-शुल्की और सरकारी व्यवस्थाओं के विषय में कारणत्मक फायदा की माति सौंपता है - "व्यवस्था वो रूप है। होने ही पै। मैं क्या करूँ? कर ही क्या करता हूँ मैं कौन हूँ। युगान्त मतलब कमालों के भाग्य में कर तक मार लाना मिला है, मार लानें।"

रघुनाथपुराण से मान्यवादी विचारों का नेतृत्व फिर भी अंडरेल की सफलता के लिए वांछक है।

यह अंडरेल निश्चय ही बफर होता : कार किसी अंगानांतरण अनुपस्थित होता। यह अंडरेल को जुट भे ही सवायी वात्मानी और कहीं के व्यक्तिमत्वों का नेतृत्व किया जाए तथा। यह अंडरेल शीर्षित और शौचालय कर्ता की रेखाएँ है। रेखाएँ वर्ग है राम की वाणी करना ही बेवुलियान है। रेखाएँ चरित्र है - "लगान हम दे नहीं लेते। वह होग कहते हैं हम तैर लो। तो क्या करे? जब देना वह कुछ ही जाने वै? कर इस कुछ करते हैं, तो स्वारे ऊपर गौरियां कल्ती है। नहीं बालू, तो तबह हो जाते हैं। फिर तुमकरार कौन सा रास्ता है? हम भितना ही चलते हैं, उतना वह होग शेर लेते हैं। मरने वाला वेश में राम फिर फिर कर सकता है। लेकिन मारने वाला लौक फिर कर सकता है, जो राम है वहीं ज्यादा अधर बालू वाली चीज है।"

1 - वही : पृष्ठ - 292
2 - वही : पृष्ठ - 311
एकल हुआ फिर जनता की कौशल, व्यवस्था, विद्यालय ताकत उसके लाभ थी ।
बालिकाएँ का तांत्रिक उसके लिए कोई कोई का एक का बनाये हुए था और बलिका की
बच्चिया म्यूनिसिपल कॉटिया को घुटने पर ला देती है। 1 मुख्य और
शास्त्रीय जनजाति के ने सौंदर्य समस्याओं की बेटी नैना गरीब जनता
वह बालिका का वास्तविक करती हुई कहती है - रे जमानी लुढ़ों इस बात पर
है क्योंकि नगर में जाये है ज्यादा जानार्दन ने बि.बि. में पर रही हो, उसी
kबों वापसी करना नहीं है कि फर्स्ट और बंगलार ने के लिए जीने के ले । जापी देखा
था यहां कह बड़े-बड़े गाँव थे । म्यूनिसिपल ने नगर-निर्माण-का बनाया।
गाँव के किसानों की जीत कोडियाँ के दाम झूठ ली गयी, और बाज वाली
किसान क्षेत्रों के दाम बिक रही है : चलाए ही नीचे आदमियों के बांगले वे ने
धम वही नगर के खिलाताओं के दूरे है, क्या किसी को के जान होती है?
गरीबों के जान नहीं होती ? किसी की को किसी कोति रहना चाहिए ? गरीबों
को किसी कोति की बहुत नहीं ? बाह जनता इस तरह मरने को लेता नहीं है।

बाहर उन्हें पमण्ड हो फिर के हथियार के जैसे से गरीबों को हुलकर
उनकी आवाज बन्द कर सकते है, तो यह उनकी मूल ही । गरीबों का राक्ष जाना
गिरता है, वहां हरेरेक बुन्द की बाह एक-एक आदमी उत्पन्न हो जाता है।
बाहर इस वक्त नगर-नियायाताओं ने गरीबों की आवाज झूठ ली : तो उन्हें कैसा
यह मिलेगा, क्योंकि गरीब बहुत दिनी तक गरीब नहीं रहेंगे और वह जानना दूर
नहीं है, जब गरीबों के लाभ में राज्य को लोगी । 2 नैना बड़ी बांदौलन का
नैजत्य करती हुई शरीर देख जाती है । नैना का बालिका बांदौलन को घरम
वास्ता तक पुत्रा देता है । गरीबों की कीट होती है । ब्राह्मण नामक नता के
वर्कमार थे और वर्कमार पर आशारित व्यवस्था के प्रति संघटित बांदौलन की
वजह हट पर बल देते थे।

'कृपया' में कूट संस्कृत को में उठाया गया है । वापसी अभाव

1 - रामेश्वर गुरु : ब्राह्मण : भुष्ट - 216-17
2 - ब्राह्मण : कृपया : भुष्ट - 320-21
में निस्संदेखा के लोगों के साथ भानवीय व्यवहार किया जाता था।
हिन्दुओं का कर्मांकन पट्टे-पुरालेखों के ढोँग-पालन पर आचरित था।
मंदिर में क्रांति होती है सिखेर साधनों के लिए। पैग-बमार जाति के नीचे जाति
के लोगों की उपस्थिति अपवादित का कारण बन जाती है। क्रूळ पीटे जाते
हैं - 'मंदिर के मंत्री के हाथों मंदिर के मंत्री पर यहुँक शासन होने
लाते।' 1 यह पदन एक नान्दोलन का जन्म देता है। बृहो सांन्तकुमार
खूलते के अस्तित्व-वौचर कराकर उनके द्वारे हुए पुराणाध्यक्ष को ललकारते हैं, कहते
हैं - 'क्या तुम ईश्वर के परे से गुलामी का बीड़ा लेकर आये हो? तुम ख़त्री
मत से दूसरों की सेवा करते हों: पर तुम गुलाम हो। तुम्हारे समाज में
कोई स्थान नहीं। तुम समाज की वृन्दावन हो। तुम्हारे ही निर्यात समाज बुझा
है, पर तुम क्रूळ हो। तुम नंदियों में नहीं जा सकते। ऐसी अतीत कह कहाँ
देश के लिया वीर करां हो सकती है? 2 दान्त्रक सांन्त-कुमार के वाज्वान
पर बचूल प्रतिक्षित होते हैं किंतु मंदिर-प्रेस के लिए नान्दोलन करते हैं। लाला-
समस्तकार्ता (खूलते) पर गृहिणियों पर गृहिण्य बलवान देते हैं, कह लोग यात्रा जाते हैं।
यह अन्याय देखकर समस्तकार्ता की बड़ी सुखदा भी बाल्योलन कोनेवुल्लू देती है।
वैर कह लोगों के बलिदान के बाद मंदिर का चरार सबके लिए लोल दिया जाता
है। दस प्रमाण में गाँवी की के खूलते-खार- नान्दोलन का भाग डुंडिया गौरव
होता है।

क्या यह उपनायन लिखा जा रहा था, तब मात्रवीर नता श्रीव्रज़े
की प्रमाणी का चिरोंच कर रहे थे। श्रीव्रज विपालियों व्यास मुनि ये
विलायक रहा श्रीव्रजे के अत्याचार का एक प्रमाल है, वहीं इस व्यास का
संरचित चिरोंच और मुनि को मिले हाली जनता की अप्ला इस बात का दंगित
है कि मात्रवीर की जनता श्रीव्रजे-खूलते को खूल बदलिय करने के पता में नहीं थी।

1 - प्रसंसन : क़मूमिन : पृष्ठ - 169-70
2 - , , , , पृष्ठ - 173
उत्पत्तियों में निकली शिक्षा-प्रवचन पर नी प्रकाश झाला गया है।
उत्पत्ति-शिक्षा कह उत्पत्ति जोड़दा बुद्धिया सम्पन्न रहनेः के लिये ही नुकसान है।
फ्रेम्वर्ड शिक्षा को सर्व-जन-सुलभ बनाने के पताकार है। इस सार्वजनिक सुलभता के लिये ही प्रकाश झाला गया है। यहाँ तालीम को भी एक अन्तर्दृष्टि बना है। व्यापार में ज्यादा धृति लगाओ, ज्यादा नफरत होगा। तालीम में यह सब ज्यादा करें, ऐसे ज्यादा उत्पत्ति औरताएं। मैं कहता हूँ, उन्हीं है उन्हीं तालीम के लिये मुख्य मुख्य हो जाता है। तालीम के लिये गरीब गरीब आदि का अंदर है उन्हीं हिमायत के लिये मुख्य हो जाता है। यह विपरीत है।
पुलक को तालीम की उससे कहीं ज्यादा ज्यादा है जिनीं की धीरे की।
कहता हूँ, शर्मना कुमार के इस वचन में फ्रेम्वर्ड के लघुने विचार है, जो आज की उतनी ही प्रायोजिक है।

फ्रेम्वर्ड ने कहा, "मे नामीः का व्याख्या-करित्र प्रस्तुत किया है।
विशेष शिक्षा अनुसार के बारिच-विचार में फ्रेम्वर्ड की धृति मनरीका प्रवचन इक्षु का समावेश है। उनके दुर्लभ बारिच की प्रवृत्त मुख्य में उनका पारिवारिक-व्यापारिक परिवेश है।
वह सुरक्षान्त का सब नाहासन का बेटा है, इसलिए उसके सार्वजनिक व्यवस्था व्यवस्था का वर्तमान है। वह महाशीरह है बार फिल्म स्थापत्य जनकी की उद्योग के कारण उसका व्यक्तित्व बुजुर्ग हो जाता है, इसलिए वह दोनों ही के प्रति विचित्रता है।
कहता है, "क्या लिखा बार का प्रस्तुत है विचार किया, वह पुस्तक के लिये पान्य को गर्व की तिसरी नाराज वह त्यौग्त। महाशीरह के शिक्षा और जनित उसके बालक रोज ही रहे जाते थे। उसी तरह व्यापार में पुस्तक से होती थी।

अनुकूलता की अत्याधुनिक से कारण उसका विचार सिर्फ नहीं हुआ।

1 - वही : पुस्तक - 66
2 - वही : पुस्तक - 13
वस्तुतः विवाह एक धनाद्यु विचारा रेणुका देवी की बस्ती वृक्ष से होता है समरकान्त और वृक्ष के मनोवृत्तिगत कंठार है युक्ता की -
प्रांता ने देते की चार देती है पूरी की थी। त्याग की जगह भौग, शील की जगह तैज्ज, कौम की जगह लीला का शेयर किया था। भीमराज की निम्न का उसे भयावह न था। और यह युक्त हक्वति की युक्ति व्याख्या गयी युक्ति-हक्वति के युक्त ( समरकान्त ) है, जिन्हें पुरुषार्थ का कोई विना नहीं। ।
भीमराज समरकान्त का फिस्ता व्याख्या एक गरीब मुस्लमान कन्या क्षीणा की बाँदियों होता है। यह क्षीणा से सवार करना चाहता है, लेकिन उसी लाभ का लाभ है, बल्कि वह फिस्ता के विशेष के बाद घर से भाग जाता है। जबकि क्षीणा क्षीण के फिस्ता में बहुत त्याग करती है, वह भी सामाजिक स्तर नवीन के और बदलती है, लेकिन नए फिस्ता का न्याय ठूला पहले पर अपने लोग और क्षीणा के सवार करने की सलाह देता है।

क्षीण का थसकन्त घर कर ही हुमकूर है। वह तत्कालीन राज्यीय-काळेशण के वातावरण में समाज-सेवक बन गया है। वह श्रद्धा की बात करता है, लेकिन उसके श्रद्धा पर उर्जा नहीं है। दो रामविलास शनि के शब्दों में - "खेती मुक्त श्रद्धा का यह समर्थक, अब है जमीला समाज करता है। क्षीणा के मामले में वह दोहरा सवारीबाधित करता है - एक तरफ अपनी लोग, जो मां का बन जुड़ी है, दूसरी तरफ, क्षीणा है, जो उसके प्रेमिक है। फिस्ता है में में वह दोहरी दूसरा करता है: एक तरफ बात घरें दे, जिन्हे पंजाब का किसी बात है: दूसरी तरफ, क्षीणा है, जिन्हे बायके वह देश-माता नाम रहता है।

क्षीण का फिस्ता लाला समरकान्त भी सामाजी संस्कृति के पीछे है। उनका गरीब-प्रेम महज विचार है। विष्वास-परिशिष्ट को जीविका के रुपरे देखकर वे अपनी सामाजी महत्व की ही दुकान करते हैं। यह तो यह है कि - क्षीणा

1 - कही : पृष्ठ - 14
2 - डॉ रामविलास शिं : फिस्ता और उनका युग : पृष्ठ - 97
निगाह में जो बुक है वह राज्य है। पानवता भी को बस्तु है, छह साल वह यानी कि इतनी ही नहीं है। 1 उनका वर्ण बंथा तो है कि व्यंजन को मौर्य में कारप्र सही है। इसे, इसका अन-शास्त्रीय भाषण उसके जूते पुकारा है। बाद में गांधीजी के आदर्श के आयार पर समर्थन का ज्ञाता है। 2

"कम्पूकी" के कलिया नारी-पात्र उपन्यास की उपस्थिति है - "हुड़दा सम्पन्नता के, विलास के जीवन में नुका होकर देविका का फूल लेती है। बकरी नारी की बुराणा-शास्त्रीय ओर अभ्यं सम्पन्नता का प्रतीक है कि रिजेन बाबू निशा तो अभी में इसा व्यारा सांख्य कर पाए । नैना भारतीय नारीता के गोरख को हुरमान रखने हुए जय को समाज पर भयों भाव कर देती है। "कम्पूकी" के शरीर पात्र इन नारीतें गुरु प्रसंग संग्रह करते हैं। 3

स्वामी बालासागर और अंत मुख्त नुका गैसे पात्र ने अपनी या तात्र सांख्य की रचना की किताब में - बच्ची व्याख्यातारिक प्रतिबिंद का कारण - नेहरु वासा जगा लेते हैं।

हस प्रसंग "कम्पूकी" में प्रसंग का व्याख्यातार अभी उत्सुक रूप में उपस्थित हुआ है। प्रसंग ने इस उपन्यास में तत्कालीन सांख्यिक-राजनीतिक परिस्थितियों का भलत्तक समय दिया है। पात्रों के चित्र-प्रतिभा में प्रसंग ने अपनी मनोवैज्ञानिक-कुलुम्ब इस्तून में पारिवारिक ही दिया है। "कम्पूकी", गंगने के बाद प्रसंग की व्याख्याता का एक उल्लेखनीय पृष्ठ है।

गो वा न :-

प्रसंग ने "1932 में "गोपाल" किताब बारस लिखी थी। वह उपन्यास करीब तीन साल में पूरा हुआ।" 3 हसका प्रकाशन-काल 1936 है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>नाम</th>
<th>पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>प्रसंग</td>
<td>कम्पूकी</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>राजेशवर गुरु</td>
<td>प्रसंग</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>मनन गोपाल</td>
<td>कल्य का मकबूर</td>
</tr>
</tbody>
</table>
गौदाने प्रभुवंद की संख्यात्तकता है। हरेन्द्र प्रभुवंद का यथार्थ चरम अवस्था को प्राप्त हुआ है। हरेन्द्र प्रभुवंद ने इस उपन्यास में मातृत्व समाज के एक बहुत बड़े पाण को कार्यक्षेत्र का विषय बनाया है। गौदाने में प्रभुवंद ने एक और श्रामिक-जीवन विचार का मातृत्व-जीवन का यथार्थ-विचार किया है, जिसमें दूसरी ओर सहरी-जीवन की वैधिकता-वादः विविधताओं पर भी भ्रान्त बनाया है। - ग्रामीण देश के मीठे नागरिकों के दो दुख जीवन-स्तर हैं।

उन्नी के तो वह, जो शहरी में रहता है और मातृत्व होकर भी बने को मातृत्व करते जानता है तथा दूसरा वह है जिसके बैंड गांवों बसते देखते हैं जब तक बड़े मातृत्व जन-समूह का जीवन है, जहाँ पर ही स्वयं मातृत्व उपन्यास करता है और एक वर्ग फूटकर लगने तथा सरकारी कानूनों का है, जो रहता तो देखते हैं न रहनु वसे को शहरी ठीक है। इन सबसे यथार्थ विचार है इस उपन्यास में हुआ है।

1. हरेन्द्र "हम्बे वर्णी में गौदाने में मातृत्व ग्राम-हस्तांत और नगर-हस्तांत का महाकाव्य कहा जा सकता है, यदि हम गौदान के समय के परालेक्च की संख्या मानकर ऐसा सोचते हैं।"

2. "गौदाने की कैलिफोर्निया संस्था छुड़ा की सामाजिक कार्य की सामरिक है। " जिकानी के जीवन के जल-जल पहुंच पर वह उपन्यास निकल गुज़े थे। जिनके में बैंड के और ज्ञान-ग्रहण पर संगीत हो जाते हैं। यहाँ विचारों की लगावत की गुलाबी पर - दूसरे वर्ग की संपत्ति पर उन्होंने विचार के कोई उपन्यास न रखा था। गौदाने रखते हैं उस समय पर प्राण भागा जो भागे रह उनके जीवन को सबसे ज्यादा स्पष्टः करते हैं।"

3. "गौदाने का नायक दूसरी व्यक्ति पात्र भी है और प्रतिकार (टिम्फील) पात्र भी है। दूसरी के बारित की व्यक्ति और समाज का कठोर कल्तक कैसे करता है। गौदाने ने दृष्टि-की उद्धारहित करने के लिए ही दूसरी के बारित होगा है। दूसरी के जीवन की संस्कृति समाजीय मातृत्व दृष्टि की समस्याओं हैं।"

1. शीताल नवाब: प्रभुवंद- में इकलित हो जिपुर्ण सिंघ का निवेदन वालतमन्त्रण पृष्ठ - 110
2. गुणाराधन विमल: प्रभुवंद: पृष्ठ - 146
3. डॉ. रामप्रकाश सरार्त: प्रभुवंद और उसका युग: पृष्ठ - 101
हैरी वस्त्र के बेलारी गाँव का फिसान है। उसके पास पाँच-हँ: बिपे जगन है। पर मैं कुछ पाँच ग्राह्य हैं - हैरी, राजकीय, गोबर, लौंना नींव रूपार। पाँचों की-तौर पर नहीं कहते हैं फिर भी वही मूले ही उन्हें कहते ही रहते हैं। फूड का बोध दिन-दिन बढ़ता जाता है - इस फसल में कब बुद्धि लाशम मैं तीन लेने पर तीन करी ऊपर पर किसी तीन तीन करी था, जिस कर तीन से रूपार शून्य के बदले जाते हैं। यहाँ सारा है वाण पाँच वाण हुए ढेल के लिए उसका रूपार तिस थे, उसका शान्त है बुका था : पर वह सारा रूपार ज्यों के ल्याया बने हुए हैं। वातावरण पक्ष है उसी रूपार ढेल का बुंदो बोर था : बार बोर चौर बोर हुए है, और उस तीस के छन तीन सबसे में बोर है, उसके तीन तीन रूपार होने लगे हो। उल्लासी विषयों बहुतान्त्र की, जै गाँव में नौन, तैल, तमाट मुक्त होने रहे हुए हैं।

बदवारे के समय उसने चारी-चार रूपार ढेलर भाष्य ने देना पड़ा था उसके भी लापता हो रूपार हो गए थे : क्योंकि जब नायक रूपार का व्याप है। लापता के भी बारीमें बच्चों रूपार बांकी भड़े हुए थे।... लगी जिन्दगी है बाल बच्चों का काम खिचे पर पक्ष है। गोबर बांचे बास्ना का विवाह। बुहुत हाथ बांचने पर भी तीन हो बैठे है का बच न होगे। ये तीन हो बिखरे पर बैठे है। विवाह चाहता है कि इसी है एक पौड़ा लेना है : जिसका बात है उसका पाँच-पाँच बुका है : लेकिन हर तरह का कष्ट उठाने पर भी गला नहीं फुटता। बारी दरअस्स बुढ़ता जाता और एक बार उसका पार-वार शब्द नीलाम की जाता है, उसके बाल कब्जे निराश ढेलर बील मार्ग हिरी है। 1

यह दशा बख्शे हैरी की नहीं थी। हैरी एक बार दूसरे का फिसान है। गाँव में बुहुतों की दशा तो हैरी है नी बल्लर थी। हैरी की - इसका दैनिक तो यहीं कि यह विपातित बख्शे उसी के सिर न थी। अथ: अब भी रीतारी का यही दादा था। विषयकिष्य की दशा तो यहीं भी बल्लर थी। शीना और हैरी की उसका कल हुए क्यों कुल तीन सात बुद्ध हुए थे : मगर दूसरे पर

1 - प्रमवंद : गोवडान : गृङ्ग - 32
चार-चार घटी का बौछार लूंगा। मरीसूर की हल की कैसी कहता है। उस पर एक हजार दो कूट बैठी ही देना है। दिखावा महल के पर मिलार की नींव नहीं पाता: लेकिन कर्ज का कोई ठीकाना नहीं।" ¹

"राजाने मैं प्रेमबल्द ने कुवाक-शौकान के बल्ले जातिल स्वारप को उद्धुरांतित किया है। हैरी के राय साहब हारी के पुल-मिलकर बातें करते हैं उसी वसना बुलाया रोते हैं। वे हारी के समता अपनी वसना की विजयलाल को लाकर उसकी बहादुरी भी देना चाहते हैं, ताकि हारी उनके शोकण के कुटूक को क्रयान न सके। राय साहब कहते हैं - "मुक्त-हारी में हम रूप बना दिया है, हमें मनो पुरुषार्थ पर लेख-मात्र की विश्वास नहीं, केवल अखलाक हो जाए जिसे हर शिक्षा-शिक्षक किसी तरह हमें ज्ञान-पात्र बने रहता जो उनकी सहायता है अपनी छात्रा पर वार्तकः ज्ञाना ही बनारा उद्धव है। मिलुबाल ने हमारा बोख़ाल ने हमारा भावानी और तुलक-मिलाछ बना दिया है कि हमें शीत, निज़ी और देसा का लापण ही गया है। दिन हो था जब हमारी हस्ती फिर फिर बाँटी है। में उस दिन का स्वागत करते हैं कैसा बेल्त हूँ। खेतर वह दिन बल्ला लाते। वह हमारी उदारा का दिन होगा।" ² रायकाशाब को पालूँ है कि हारी ची उनकी बातें खुलने लायक है। क्योंकि उनकी मीठी बातें खुलकर हारी बनने गर्व के किवा-धारा को वगून के रघुस लाने के लिए ब्रह्म-भरा देगा। वे रायकाशा को वांछित करते हैं कि - "तुम्हारे गर्व हें कि हम हें का पांच घरी की बाता है।" ³ वे हारी से नीति-वर्मा की बात कर ही रहे थे कि वेदार्द व्यावर्धा बनाने के प्रयोग पर काम बन्द कर देने की सहाय मिली है, रायकाशा के पास पर बल पड़ा जाता है और वे वेदार्द भी ठीक करने के लिए उठ कर बल देते हैं।

¹- वहीं: पृष्ठ - 15
²- वहीं: पृष्ठ - 16
³- वहीं: पृष्ठ - 13
राय साहब का मानवतावाद और राजनीति मध्य शौर्य के लिए लौटा गया ख्यात है - "यह नहीं कि उनके हताहत में बासापीया के साथ कौई लाते रियासत की जाती है, या छोटे लॉर्ड नाबालिग की कई चीजें कब न हो, परंतु यह सारी बुद्धिमानी मुस्लिमों के लिए जाती थी। राय साहब की कोई पर कौई कलंक न है ख्यात था।"**

पिछला का काम तो। शिकार करना है: कार वह गरजने लौर गुरोगे के बदले मीठी बौछारी बौछारी सकता, तो उसे पर बेठे मनमाना शिकार भील जाता। शिकार की बौछार में बेष्ट मैं न पतका पड़ता।**

"राय साहब ने भी मीठी बौछारी बौछारी शिकार करता सीखा लिया है।" **

"शिकारियों के बौछार के पिछले शिकारी के लिए इन्होंने जो दावा-पूछ स्वावलंभ किया है, उन्हें देखी हुई जानें। राय भालानेंद्र, राजा बिलालींब खरों बच्चे माफ़ की है।"**

हौरी क्षण दृष्टिका का बनन्य पोषण है। उसमें पारंपरिक लाओं और नैतिक महत्वाकांकों के प्रति प्रभु बोध है। वह बसे मान्यताओं शिकारी के कारण शौर्य के यथार्थ के अनुपालन करता है। वह वस्त्र, ब्यूरो, समाज और अपने पारंपरिक क्षेत्र लेकर मानक का बहार बनाता है। इसीलिए कर्मयोग, महानत, कारिन्जु, फूड़-फुड़ा-फुड़ा, समाज के नेता और उसके नारे-नावे सब सब है। समय की नज़दीं को फसलना तो है, लेकिन समय की मांग को - जो गौर स्वयं निर्देश के रूप में व्यक्त होता है - वह स्वीकार नहीं कर पाता।

"गौर सूखा को हौरी का बुझामान व्यक्त करना फैलन्द नहीं है। वह हौरी है कबल है - "यह तुम रोजर-रोजर मालिकाओं की बुझामान करने क्यों जाते हो? बाकी न चुके तो धारा बांधकर मार्मांग तुकता है, बैठार देनी की पूर्ति है, नवर-नवरणार मध्य को इसी मार्मांग जाता है फिर विस्मी की क्षण्व खलामी करूँ।"

1 - वंश : पृष्ठ - 13
2 - टॉम राम विलास मार्क : प्रथंगद और उनका युग : पृष्ठ - 103
कह समय यही नाव होरी के मन में पी ला रहे थे : लेकिन लड़के के छवि विद्वान माव को देखना बहुत था। बोला- सलामी करने न जाने तो रहे कहा? मछलन ने जब गुफाए बना दिया है, तो वहाँ क्या बाध है? यह छवि सलामी की वास्तवता की व्याख्या नहीं। वर्षे ने नाव पर लूटा गाया था जिस पर कार्यारों ने वो रुपए बनाये थे। वहां थे क्रियापद पिढ़ी में झूठे, कार्यारों ने कुछ नहीं कहा। दूसरा लड़के तो जवाब देनी चाहिए। अपने मकबरे के लिए सलामी करने जाता हूँ, पाँव मैं छींटकर नहीं है और न सलामी करने में कोई बुद्धा शुभ किया है। पन्ने हैं रहे तब जाकर नालिक को सबर होती है। कभी बाहर निकलते हैं, कभी कहीला देते हैं कि पुरातन नहीं हैं।

होरी की विवाहार है कि होरी के मछलन के घर वे बनकर बात कर रहे हैं। सम्पत्ति बढ़ी तफसिल से मिलती है। उन्होंने पूर्वजनम में जो करने का उद्देश्य है, उनका जानकारी भी ली गई है। हमें कुछ नहीं देना, तो मैं नहीं कहा। वास्तव में होरी का यह बहुत शोषण का व्याख्या बना दिए गए गृहकोष में फूल गया है। पूर्वजनम में होरी जानता है कि वह बहुत मन को समकालीन की बात है।

गौरव की तरह वर्षा की समस्या के शोषण को पड़ा न रहना है। उनका बिरोध करती है, लेकिन वर्षा का विद्वान होरी की मीरता के नीचे दबकर रह जाता है। गौरव विपक्ष में वादियां को पन्ने करने है।

1 - प्रेमानंद : गौरव - 16-17
2 - वर्षी : गृह - 18
3 - वर्षी : गृह - 18
है और हौरी पर हाँद लगाती है। धनियाँ फैलता का विरोध करती है।
हौरी ने कहा है - "यह फूल नहीं है, राखस है, पक्के राखस। यह कब हारी जाना-कपिन शीनकर माल गरफरा बांटते हैं। हाँद तो बुजाना है।" समझती जानी दूर पर डुब्लारी बाल्क नहीं हुली। तुम इन फ़िशारों से दया की बाजा रखते हो।" 1 इनके पीने पर धनियाँ के कबान की सफाई को बनाना है, तैयार उसका समाज-पीढ़ी मन धनियां को बाँटते पर उसे कबा नहीं करने देता। 2 सवाल रखते हैं - "विराजरी का यह बताकर फिर बने सिर पर लदकर बनाक बनाक
राजा था, मानो बच्चे बाहरी अपने कब लौट रहा हो।........ विराजरी के
फूसक जीवन की वह कौँ हुमका ही न कर सकता था।" 2

फिशान की धनियां-पीढ़ीता सब उसके मरजाद-पालन की भावना का
फाराफार महाक, कार्तिमुन्द्र, अब, परिपत बाजलु वैधी तत्त्व उठाते है। हौरी
का बाहर हौरी जब हौरी की गाय को झुरी फिलाकर पर खे पाग जाता है, तब
हौरा के घर को बालार ने बेचने के नाम पर भाग्यगुरु गंभीर और फूसकर
हौरी को तलाश देते हैं कि वह दुरसों को घूम दे। और दरुस्मान ने बलाटी
बाने का पक्ष मान रखते है। परम्परा उत्तारदीन अपना हुना बुलाने के लिए हौरी
को लालङ रोग और फूसकत्स वाला महान दिखाता है। तारामध्ये हौरी का लगान
की रक्षाद न देकर उसके हुबारा लखान बुलाकर बांटता है। मरजाद-पालन के
नाम पर वीरों-वीरों हौरी का सब कुछ हुए जाता है। इधे जमीन घेती जमीनी
पृथी है। वह मुबार का जाता है। कंतक: हौरी शोषण की चम्ब बब्बी में
पिस्तै हुए - मन में एक गाय बिखाने की हौरी की लालखा लिये हुए - सौभार
कौड़ देता है।

गैबर फिशारों की धनिय-पीढ़ी का अतिविभक्त पास है। वह समाज
के शोषण-काम के तमाम बेहरों को पहचानता है। लेकिन अभी उस पर हौरी की

1 - वही : पृष्ठ - 109
2 - वही : पृष्ठ - 108-9
पुरानी पीड़ी लावी है और नयी पीड़ी में कभी संपर्क करता गुज़रता नहीं किया है। यहाँ शहरी सम्पत्ति के सम्बन्ध में गैरकान व्यापार की मार्ग जा जाती है। लेकिन उसके बाद फिर बासित वातावरण की पीढ़ी, प्रेसवंद ने शहरी क्षेत्र सांस्कृतिक उपकल्प के परिणामों को दिखाया बाकी है। प्रेसवंद वास्तव में गैरकानी के कौशल के लेखक थे, वे उत्पाद के विस्तार में आधार बनाने के कदम नहीं समाप्त करते थे। उन्हें दुर्लभ था कि गैरकान नगर में बढ़ाए मूर्ध बनती है और बुराहार्दा सीधे है।

उन्होंने कभी मूर्ध के ओपराहितक रोल को नहीं समझा था। यही उनका राजनीतिक बाद था जो गैरकान में जबित हो गया है। गैरकान में प्रेसवंद के वर्तमान को ही दृष्टि नहीं था, फिर भी यह बिजी भी प्रकार का कम्यूनि वर्तमान करने के लिए तैयार नहीं है। उसे राजनीतिक कल्प की दीवार चढ़ जाते हैं और उनके विलिंग-विलिंग में दिखा है।

उनके युगा है और समर्थन है। वह प्रकार भुगत सेवा की होना: अफव बुद्धि बारे संस्कृति से दूसरे तरीकों पर विकास पाना होगा। वास्तव में गैरकान नयी पीड़ी की नयी बात है।

"गैरकान" में प्रामाणिक कला के स्थापनात्मक शहर की कथा भी कहलाती है। प्रेसवंद - गैरकान में गांव और शहर की साथ-साथ बालक बाल्य के विलिंग का अवशेष चित्र देना चाहते हैं। गांव भारतीय पुरातत्व विभाग का प्रतिक है, शहर खूंटियाबी व्यवस्था का, महानती सम्पत्ति का। दिखाई मिलती हुए गांव और उभरते हुए शहरों के विकास के व्यवस्था प्रेसवंद उस प्रतीक्षा का तंबाकू खराब रहे हैं, जिसे पुरातत्त्व लघु-लघु हो झुकी थी और नयी व्यवस्था की नींव पुकारी जा रही थी। सामाजिक प्रश्न का केंद्र ही बुका था। विभागित खूंटियाबेन ने परिणाम की बुका था। 3

मिस्टर बनना एक बैंक का भाविक है और उसकी दो शक्ति-

1. ईशारा रहते: प्रेसवंद जीवन का और इतिहास: पुष्प - 207
2. प्रेसवंद: गैरकान: पुष्प - 294
3. राजयेवर गुरु: प्रेसवंद एक ओपराहित: पुष्प - 124
भिल है। वह अपने विज्ञान के दायित्व के कारण भी दोस्त के लिए भी रियासत नहीं करता। रायसाहब क्षेत्रमें लड़के वर्ष बेटी की छादी करने के लिए बेचने के लिए बुना के लिए लेना बाजारे हैं तो वहाँ बनना बिना कैसे लिये क्षुरे कैसे को है। राय जी के झिल के खाने को गालियाँ देते थे, जो उनका राज्यपाल हॉमर भी अधिक उन्हें भगवान की फिर फिर करता था: वहाँ पृथ्वी पर उसकी बुझापत करते थे। 1

वास्तव में बनना नवोदित उथोगपति-बक्खू का प्रतिनिधि है।
किसका अधिक पर माना है और राखित-अर्थीसार किसका पृथ्वी जोधो है। उसकी
शकर मिलों के लिए देखते हैं कि खिलाले का गन उनका कोट्सर के नाम बद्री
जाता है। उसके दिलों। कुछ गंदे दिलों में रहते हैं। वास्तव में "महाकवि
सम्पत्ति" ही भेषी है कि भाषानतम वस्त्र कुछ ही बुझी है, और क्वीर में
ब्रिजविक कमर हो रहा है, गरीब ब्रिजविक गरीब।

मिस्टर लेंटा और कौकानाथ "महाकवि-सम्पत्ति" के दलाल है।
ग्यार की गरूटी उपर और उपर की गरूटी हैर करने लाम उठाने में तैयार है।
इनके पाल न तो कोई सिद्धांत है, न कोई विचार। तालाबेहोरों को महाकवि
ये वह दिल्लिया, न्यी कम्पनियाँ बौलता, चुनाव में उपविवाद लड़ते बनना और
दलाली बनाना ही इनका प्यान है।

मिस्टर मेन्हान प्रोफेसर है। वे हुए माननी में प्रेमचंद के प्रतिनिधि
पात्र हैं। "कार मेन्हान की हैरी है बोलता जा धरकिया जो व्यक्ति कैदगा, वह
बहुत कुछ प्रेमचंद के थिसा-कुला होगा। मेन्हान को बड़ा उनके अपने विचार
दिये हैं तो हैरी को बराबर प्रारंभ करते रहने की बुझे बुझा-शाफिक।" 2
मेन्हान क्या कृती और क्या में प्रेम के स्तर विरोधी है। उनके विचार में "निम्न या

1 - प्रेमचंद : गोवान : पृष्ठ - 194
2 - धौरामा विलाव शर्मा : प्रेमचंद और उनका कृति : पृष्ठ - 111
तो क्षम्यवादी है या नहीं है। है तो उच्छ भव्यसत्ता कर॥ नहीं है तो बक्ष्या होः ॥ ११ ॥ मैथिल राम साश्व और बनना जीवों के नक्लों को उपयुक्त है। सामाजिक-कार्य में वे श्रिक रूप से भाग लेते हैं। गाँवों में जाकर गरीबो-किशोरों की समस्याओं के सूचक रूप हैं। वे नारी-मुक्ति आंदोलन के भी समर्थक हैं। भारतीय नारियों की पाश्चात्योद्योग के वे प्रधान निर्माता हैं।
कीमतैया हिंदु में वे कहते हैं - "पश्चिम में जो बीचे बाँधी है; वह उन्हें ही जीवा। नीलकंठ में सदीव बादाम-प्राकृत हीता जाता है, तीनिय बंकू नकू तो दुर्भवता का ही लक्षण है। पश्चिम की स्त्री वाणी इस-स्त्राक्षरी नहीं रहना वाली। भाग की निर्माण लालसा ने उसे उच्छुक बना दिया है।" ॥ २ ॥

मैथिल नारीत्व की सार्थकता मातृत्व में माते है - "मे सम्बन्ध हैं नारी केवल माता हैं और हर कोई उपर यह जो कुछ है, वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्व संघात का सबके बड़ी सामना, सबके बड़ी तपस्या, सबके बड़ा त्याग और सबके महान किंवदंड है। एक शब्द में उसे लघू स्त्रा - जीवन का, व्यक्तित्व का और नारीत्व का भी।" ॥ ३ ॥

पालकी के रूप में प्रभुदेव से नारी की पाश्चात्योद्योग का चित्र प्रस्तुत किया है। पालकी के व्यक्तित्व का चित्र प्रभुदेव ने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं - "केवल सबके की समस्याएँ प्रतिपाद है। गात कैमल, पर चक्कल कूट-कूटकर मरी हुई। फिरया या रंगीदी का कही नाम नहीं। मैथिल में प्रभुदेव का शक्ति बन की हाजिर ज्ञान, गुरु-गुरु नव-विज्ञान की ज्ञानी व्यक्ति, नामोद-नामोद को जीवन का तत्त्व समकाली साथी, शुमाने और रिपाने की का में निवृत्त।
जहां आत्मा का स्वार्थ है वहाँ प्रकृति: जहां स्वार्थ का स्वार्थ है वहाँ स्वतंत्र-मात्र: पनौदोषारों पर कोई निर्गय, जिसमें झंझा या अभिलेखा का लोप ना हो गया।" ॥ ४ ॥

1 - प्रभुदेव : गौदम : पुष्प - 46
2 - वही : पुष्प - 137
3 - वही : पुष्प - 167
4 - वही : पुष्प - 49
हैजिन नारी के प्रति प्रेमवंद के समान-नधर है, बदामित हस्ताक्षर उन्होंने बाद में मालिक का बारिशिक परिवर्तन किया है। मालिक, मैंने को सर्वेक्षण में रेखर विद जाती है। उसके हुद्दू में मानने प्रेम के मार्ग जाते हैं। वह गर्व में प्रेमकर गरीबार का जलाज बिना फीस लिये ही करती है, उनके सुनूँद्दू को बारे हुस्ती हैः "प्रामाण्य लौटता की अध देख-देखकर उसके मत में लेख की प्रेरणा और पी प्रेम भी रखी ही। अब त्योहारित जीवन के सामने वह विलासी जीवन किया तक और बनाकरी था।" 1

मालिक का बारिश विकास नारीता की पूर्णता तक धाटा है, जब वह सच्च मार्ग स्वर वातस्य-न्याय दे गौरव के बीमार बच्चे की लेख करती है। वह मैंने की इट्टी में बहुत उंघी उठ जाती हैः "मालिक केल रणियां नहीं है पाता है और देखी-देखी माता नहीं, सब बच्चे में देखी और माता और जीवा देने वाली, जो पराये बालक को भी बका समन घड़ी है, जैसे उस माता का सदिव और देख किया है और राज दौनी हाथों से उसे हुटा रही हो।" 2 वातस्य में मैंने की इट्टि प्रेमवंद की ही अपनी इट्टी है।

सैलू में "गौराखों प्रेमवंद की उपन्यास-कहानी का वर्ण-उत्तरण है। इस उपन्यास में प्रेमवंद अपनी भुगोली मार्गस्थल को होड़कर यथार्थ के घरतल पर रखता आगे बढ़ गया है। इस उपन्यास में किसी भी समस्या का सुधार-नयार्थ इस वस्तु नहीं किया गया है, और न किसी जरूरियत के आधा पात्र का हुद्द-परिवर्तन हो गया है। जैसी की मुत्तु मानी उस जबर मानान-ज्योत्स्ना की ही मुत्तु की घोषणा है। गौर आदि विमल के शब्दों में "क्या-विकास के हर कौशल है बैठा जाये तो गौराखों में एक समय का यथार्थ ही प्रतिविम्बित नहीं हुआ है, बल्कि उसके माता-पिता किसना का इतिहास है। परन्तु वह प्रत्याभिमान इतिहास की मानता मुक्त नहीं है, विश्व वह क्षणिक चित्रों की मानता कर खुलते हिरने का जिम्मेदारी फिरक है।" 3

1 वही : पृष्ठ - 256  
2 - वही : पृष्ठ - 280  
3 - गौर आदि विमल : प्रेमवंद : पृष्ठ - 147
प्रकाशन 1948 में हुआ। 

उन्होंने (प्रेमचंद) यह कहाया था कि हर इतिहास के व्याख्यात वे यह साफ़ साफ़ करे कि आपने पर बचकर नी कर्त्ता जाने वाली मौलिक
सफलता प्राप्त की जा सकती है - या का से कम उसका जात्मा-क्षेत्र उपलब्ध
किया जा सकता है जो सामूहिक जीवन की एक वातावरण है। सफलता की
प्राप्ति के लिए जीवन में अत्यंत, स्थाई फल और मूल मानवनीति तनिक की
वातावरण नहीं हैं।

* * *

वेदवस्तु एक चित्रात्म जो है। उनके परिवार में पत्नी शैवा,
बेटी पैका, कोटा बेटा संधु कुमार और बुझ बेटा संजुस्त एवं उसकी पत्नी
पुष्पा है। वेदवस्तु की रचनाओं का समाज में आदर है। वेदवस्तु ने अपना
जीवन साहित्य-साक्षात्मा में लगा दिया है। उन्होंने साहित्य-साक्षात्मा से जात्मा-
क्षेत्रों का उल्लोहा किया है और मौलिक सफलताओं के प्रति वे प्रकाश
उदासीन रहे हैं: 

उनका संन्देश-भावना से करा हुआ पता की संख्या की उपस्थता को जीवन-लक्ष
न बना सकता। यह नहीं कि वे धन का पुत्ता जानते न हो। मगर उनके भाषा में
यह सर्वसाथ कम गई थी कि जिस राष्ट्र ने तीन चौथाई मात्र के आस के
वर्ष-किसी एक को बहुत धन धन बनाना का कोई नायक वाहिकार नहीं है।

1 - कृति राय : कल्प का सिपाही : प्रेमचंद : पृष्ठ - 619
2 - प्रेमचंद : मंगलपूर्व व बलि रचनारंग : पृष्ठ - 204
3 - वही : पृष्ठ - 206
परन्तु उनके नैतिक बादशाह एवं वात्सल-तोष्णीस्वभाव से उनके पारिवार करने हुए नहीं थे। विशेषतः उनकी पत्नी शैव्या और कू लता-कुमार। "कू-कुला
उन्हें बफरी दस्रा पर केद होता था, विशेषतः कई उनकी जन्म-दागिनी शैव्या
गृहस्थी की चिनांतों से जतक उन्हें कुट्टा बचन सुगन करी थी, पर उनसे अखंड-झांकना
कुटीर में क्षम शक में तेकर बेड़ते ही वह सब कुर मूल साहित्य-स्वर्ग में पहुंच जाते
थे। वात्सलयाः नाय उठाटा था। बारा अवसाद और विषम साता ही जाता
था।" 1 उनसा बेटा कुमार रो बने रिता के अपरिश्चन स्वभाव का विरोध
करता था। कहता है - "बन बायको साहित्य से प्रेम था, तो गृहस्थ बनने का
क्या खरह था। आपके अपना जीवन तो चौफट फिला ही, हमारा जीवन भी
फिट्टी में फिला दिया।" 2

देवकुमार का पत्तिकर मध्यवर्गीय है। वे समाज की मर्यादाओं की
धीमा में रहने वाले, नैतिकता और बादशाह में निर्वाचन करने वाले, पूरी जगती वेगी
क्षत्रिय है। नते बलातों की रफ्तार में उनकी नैतिक नायकता बढ़ती पीड़ी रह जाती
थी। शेष कुमार रिता कठरता वर्षों पहले से दामों बेड़ी गोद में बनी बायका
हैं। किसी कलाती कार्यालय में उनका सहयोग बाहर है। लेकिन देवकुमार
वही कैसीक और न्याय-नारायण के विरुद्ध समर्थ है। भूमिका के वारे देवकुमार टिक नहीं पाते। "देवकुमार मर्यादाओं और
सिद्धांतों के मार-चाबनों की बाधा है रहे है, पर हन दोनों नौकरों की \( \text{3} \)
के सामने उनकी एक न कली थी।" 3 केवल वे परिस्थितियाँ का विशेषण
करने के बाद बफरी सिद्धांतों को अप्रासादिक पाते है। और उस निष्कर्ष पर
पहुँचते हैं कि हम सामाजिक दृष्टिकोण में - "सबको समान अवसाद करां है?
बाजार लगा हुआ है। जो चाहे वहाँ से बफरी छाया की चीज़ छोड़ देता है।

1 - बकी : पृष्ठ - 205
2 - बकी : पृष्ठ - 106
3 - बकी : पृष्ठ - 226
मनार लड़ीदेगा तो वही जिसके पास फैली है। और जब सबके पास फैली नहीं है
ली सबका बराबर वधिकार है नाना जाना।"  
1 ऐसी कत्सैल-विनामान अवस्था
में देवता बनना कारर्था है - 'हां, देवता हमेशा रहेगा और हमेशा रहेगा है। उन्हें
कह भी संशय की और नीति पर कल्ता हुआ नब जाता है। वे बप्पे जीवन
की आदर्शति देकर संशय है चिधा दो जाते है। ठेकन उन्हें देवता क्या कहें?
कायर कहें, लालमैवकी कहें, देवता वह है जो न्याय की रजना के और
उसके लिए प्राण्ये दे, अगर वह मानकर अवजन बनता है तो फर्म है गिरता है,
और अगर उनके बाहर में यह अवजन बटकरी ही नहीं तो वह भांझ भी है
और मूर्ख भी देकर भिन्न तरह नहीं। देवताओं ने ही नामजा और इश्वर और
पारित की मिलकर्णे फैलाकर यह कल्ति की आर बनाया है। पुरुष्य ने कह तक
लक्षका अंत कर दिया नाही तो इस दशा में हिन्दा रहने से कहीं कहीं होता।
अगर, पुरुष्यों को पुरुष्य बनना पूरा। दोरस्त्रों के बीच में उनके ललने के लिए
संभिकार बनाना पूरा। उनके लंबे का शिकार बनना देवतापन नहीं बनता है। 2
कह निष्कर्ण पर पहुँचकर देवकुमार देवकुमार के सहमत हो जाते है।

"मंगलमुखः में नारी-समस्या को भी उठाया गया है। पुराण-
प्रवा समाज में नारी बप्पी आर्थिक परावलिम्फिका वैकारण शैचित्र ठहरी
है। देवकुमार बप्पी पत्नी पुरुषा पर वधिकार क्षमा है। वह तक देता है -
"जो स्त्री पुरुष पर जन्मलिन है, उसे पुरुष की युक्त माननी पूलों।"  
3 वास्तव में यह नारी की आर्थिक परावलिम्फिका का सवाल है। पुरुषा जानती है
कि नारी आर्थिक त्यागलिम्फ द्वारा प्राप्त कर ले तो बप्पी रहस्य की समान पूर्वक
जीवन गुजार सकती है। तब उसी किसी पुरुष की आर्थिक समस्या के बाद
नहीं होगी। इस समाज-व्यवस्था में नारी की स्वर्ण मन्दिरा और बादश के
व्यथन तो दमके के बाद ही वाट्प-बल और शक्ति मिल सकती है।

1 - वही : पृष्ठ - 230
2 - वही : पृष्ठ - 231
3 - वही : पृष्ठ - 210
कूरी कथा के नायार पर 'मेलग्लुश्व' के लिए कोई निखरण नहीं दिया जा सकता। इसके बाद-विवाद की दिशा को देखते हुए यह कथा जो सक्रियता है कि 'मेलग्लुश्व' अनेकद उल्लक्षण का एक उत्कृष्टतम कार्यान्वण दिखाता है।

लेखक उपन्यास के बैत में निखरण-स्वरूप यह कथा जा सकता है कि अन्य उपन्यासें में मातृत्व समाज का यथार्थ विवरण दिया है। यहाँ तक सम्पादकों की पहचान, और उनके स्वरूप तक पहुंचने का सवाल है, बैठकी नहीं करते, उन्हें सामाजिक यथार्थ की समस्याएँ जगति में अपनाते हैं। बालक नहीं होते हुए मी जब वे उनके निवास की बात करते हैं, मनुष्य की नै कर नीवती, उसकी सद्भावितियाँ पर वपसी गुप्त मान्यता के तक्त वे वपसी हो। सोच की सामने रखते हैं कि यदि मनुष्य की सुयुक्ता थी तो, उसकी सद्भावितियाँ को उपयोगी जो काम, तब भूल हारी सम्पादिक का समाप्त फिर आया। उनके चिंतन की यह स्वतंत्रता विभवकालीन और वस्त्रावली समाजी वे साथ उनकी स्थितियाँ में बात करते हैं, परंतु यह धर्मकार कालिग, पुरुष की की अफसर नैक नीति कार्य, उनकी लघुजन्त्र कार्य, वे उससे इस मानवादी चिंतन से मुक्त नहीं की पाते।

उन्हें श्री मातृत्व के रोग की और उसके भारोत्तो की दरी पहचान है, किंतु जब उपन्यास की बात बात करते हैं, उनकी सोच बलात्तु इनकी उपकि करते हुए वार-वार का और अध्यापनादी है उठती है।

1 - राजक फरश्व के बारें 'लेखक का गाम उपकाल फालंडा नहीं, बालिका जीवन का एक वास्तविक, रेलवेश्वरिक बिना उपकाल करता है। पुरुषों और रेलवार के बागा कठुआलियाँ को बुझाने वाले और पांड की जगह लोगों के विचारों से काम लेता, वेदों, पुरातन नाटक-रिचों, रेलवेश्वरिक और लाखों के ग्रस्त वास्तविक लोगों की बाहेर नायकों के लेखकों द्वार वाजना वस्त्र लुप्त है, किंतु उघड़ा गरना उपन्यास फिक्त नहीं है।

2 - नायक के राजक फरश्व।

---

1 - शिखुरांगर मित्र : प्रसंज के विरास्त का सवाल : पृष्ठ - 20
2 - राजक फरश्व : उपन्यास और लोक जीवन : पृष्ठ - 99
म प्रसंग यथार्थवादी उपन्यास परम्परा के युग-निर्माता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में अपने समय और समाज की कस्तों तस्वीर बिंबिंब है और उसे अपनी बला के रूपों में वास्तव जीवंत बनाया है। वे अपनी रचना यात्रा में परिसर सामाजिक-यथार्थ के लिए अग्रवार रहे हैं। समस्त सामाजिक-राजनीतिक आदर्श-मान्यताओं के प्रभाव ने जहां प्रसंग के यथार्थ की आदर्शन-नूतन कराया है, वहीं उनके प्रत्येक बाल्ह उपन्यास में सामाजिक अभिषेक के नै-नै अंतर्न हुजूम चले गए हैं। पन्ने लोग प्रति से प्रसंग के युग-आधुन का जागरूक्त निरंतर बढ़ता गया है और उनकी व्याख्या-इरादें अलगाव निरंतर गई है। अपने प्रारंभिक उपन्यासों में प्रसंग युग-आधुन के कारण पारंपरिक आदर्शों के प्रति योग-दृष्टि है, हैकं कार्यकोप उपन्यासों में वे आदर्श की अन्यायगिता को स्वीकारते हुए देखे जा जाते हैं।